Fortnightly per copy Rs. 5/- only ओ३म् 18thMarch2016

आर्य जीवन
ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

उन नौ जवानों को जिन्होंने आज से ८५ वर्ष पहले २३ मार्च १९३१ को हंसते-हंसते फांसी को चूमा उन्हे

शत् शत् प्रणाम

शहीद दिवस - 23 मार्च

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशा होगा

भगत सिंह भारत के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे । वे देश की आजादी के लिए जिस साहस के साथ शक्ति-शाली ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया वे आज के युवकों के लिए एक बहुत बडा आदर्श है । भगतसिंह ने केन्द्रीय संसद (सेंट्रल असेम्बली) में बम फेंक कर भागने से मना कर दिया जिसके फल स्वरूप इन्हे २३ मार्च १९३१ को इनके दो अन्य साथियों राजगुरु तथा सुखदेव जी के साथ फांसी पर लटका दिया गया । सारे देश ने उनके बलिदान को बडी वीरता से याद किया । पहले लाहोर में साण्डर्स-वध और उसके बाद दिल्ली की केन्द्रीय असेम्बली में चन्द्र शेखर आजाद व पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ बम विस्फोट करके ब्रिटिश शासन के विरुद्ध खुले बिद्रोह को बुलन्दी प्रदान की । देश क्रान्तिकारियों को सदा-सदा के लिए याद करता रहेगा और उनकी आकाक्षांओं के बुताबिक खरोड़ो-खरोड़ो गरीब व पिछड़े लोगों को न्याय दिलाने मुहिम को आगे बढ़ाते रहेगा-इंकलाब जिन्दाबाद ।

जिन्दगी तो अपने दम पर ही जी जाती है
दूसरों के कंधों पर तो सिर्फ जनाजे उठाये जाते हैं । -भगतसिंह

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के तत्वावधान में आयोजित

विद्वत समागम में

प्रान्त से सम्बधित गुरुकुलों में पढ़े लिखे विद्वानों ने भाग लिया

विदूवत समागम के अवसर पर स्वामी ब्रह्मानंदजी का सम्मान करते हुए सभा उपाध्यक्ष लक्षमणजी ठाकुर, पुस्तकाध्यक्ष श्री गुरुनारायणजी और सभा उपमंत्री श्री रामचन्द्र कुमारजी ।

पण्डित नरेन्द्र भवन सभागार में आयोजित विद्वत समागम में उपस्थित प्रतिनिधिगण

पण्डित नरेन्द्र भवन सभागार में आयोजित विद्वत समागम में उपस्थित प्रतिनिधिगण

'मैं और मेरा देश'

–मन मोहन कुमार आर्य, देहरादून।

मैं अपने शरीर में रहने वाला एक चेतन तत्व हूं। आध्यात्मिक जगत् में इसे जीवात्मा कह कर पुकारा जाता है। मैं अजन्मा, अविनाशी, नित्य, जन्म–मृत्यु के चक्र में फंसा हुआ तथा इससे मुक्ति हेतु प्रयत्नशील, चेतन, स्वल्प परिमाण वाला, अल्पज्ञानी एवं ससीम, आनन्दरहित, सुख–आनन्द का अभिलाशी तत्व हूं। मेरा जन्म माता–पिता से हुआ है। मेरे माता–पिता व इस संसार को, जिसमें मुझे भेजा गया है, पहले से ही रचा व बनाया गया है। पहले सृश्टि की रचना किसी सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और चेतन सत्ता ने की, उसके पश्चात वनस्पति और पशु व पक्षी आदि प्राणियों की रचना करके मनुश्योत्पत्ति की। विगत 1,96,08,53,115 वर्शो से यह कम अनवरत जारी है। मुझे, मेरे माता–पिता को व इस सृश्टि को बनाने वाला कौन है? इसका उत्तर शास्त्रों के अध्ययन, चिन्तन–मनन व विवेक से मिलता है कि कोई सत्य, चेतन, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, निराकार, कारण प्रकृति का स्वामी व नियंत्रक, नित्य, अनुत्पन्न, अविनाशी, सर्व–अन्तर्यामी, सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्व है जिसे हम ईश्वर, परमात्मा, भगवान, सृश्टिकर्ता, गाड, खुदा, अल्लाह, रब, मालिक आदि नामों से जानते हैं। यह ईश्वर सत्ता एक ही हो सकती है, एक से अधिक नहीं, ऐसा सृष्टि को देखकर व विचार करने पर ज्ञात होता है। सृश्टि के आरम्भ से अब तक इस जगत में अनेक श्रेश्ठ पुरूशों ने जन्म लिया है जिनका यश व कीर्ति आज तक विद्यमान है। यह सभी सत्याचारी, अन्याय से पीड़ित लोगों की रक्षा करने वाले, त्यागी, तपस्वी, ईश्वरभक्त, वेदभक्त एवं वेदानुयायी, माता–पिता व आचार्यो के प्रति सेवा व भक्ति–भावना रखने वाले थे। इनमें सें कुछ ज्ञात महापुरूश मनु, राम, कृश्ण, चाणक्य, दयानन्द, सरदार पटेल, नेताजी सुभाश चन्द्र बोस, राम प्रसाद बिस्मिल, चन्द्र शेखर आजाद, बन्दा बैरागी, भगत सिंह आदि हुए हैं। हमें महापुरूशों के जीवन से प्रेरणा लेकर उनके गुणों को धारण करना है, यही उन महापुरूशों की पूजा है एवं स्तुति–प्रार्थना–उपासना–ध्यान आदि केवल ईश्वर का ही करना है और यही ईश्वर की पूजा है।

वेदादि साहित्य का अध्ययन करने पर हमने पाया कि हमारा जन्म भोग व अपवर्ग के लिए हुआ है। भोग का अर्थ है कि हमने अपने पूर्व जन्मों में जो अच्छे–बुरे कर्म किये थे उन कर्मों में जिन कर्मों का भोग अभी तक हमें प्राप्त नहीं हुआ है, वह हमारा प्रारब्ध है। उसे हमें इस जन्म व अगले जन्मों में भोगना है। इन कर्मो के फलों को भोगने के साथ ईश्वर ने हमें एक सुविधा यह भी दी है कि यदि हम स्वाध्याय से अपने ज्ञान को बढ़ा कर एवं यथार्थ वेदोक्त स्तुति–प्रार्थना–उपासना से ध्यान व समाधि को सिद्ध कर ईश्वर का साक्षात्कार कर लेते हैं तो हमारी मुक्ति व हमें मोक्ष की प्राप्ति हो जायेगी। मुक्ति की अवधि एक परान्तकाल अर्थात् 31,10,40,00,00,00,000 वर्श वा इकतीस नील दस खरब चालीस अरब वर्ष होती है। उसके बाद हमारा पुनः जन्म होगा। इस मुक्ति की अवधि में हमें किंचित भी दुःख की अवस्था से नहीं गुजरना पड़ेगा। यह उपलब्धि हमारे शास्त्राध्ययन एवं उसके अनुसार जीवन–यापन व योग साधना से प्राप्त होती है। यहां यह भी लिखना उचित होगा कि सृश्टि के आरम्भ से महाभारत काल तक और यहां से मध्य काल में बौद्ध मत के आरम्भ तक सारे विश्व में केवल वैदिक धर्म व संस्कृति का ही प्रचार–प्रसार–पालन व धारण सर्वत्र रहा है। महाभारत काल के पश्चात अज्ञानतावश बौद्ध, जैन, पौराणिक व अन्य दूरस्थ देशों में ऐसे ही भिन्न भिन्न मतों का प्रादुर्भाव हुआ। यदि सभी मतों के व्यक्ति मिल कर परस्पर मित्रता व निष्पक्षता से विचार–विमर्श कर मनुश्य धर्म का निर्धारण करें तो निश्चित रूप से वैदिक धर्म व मत को ही सर्वसम्मति से स्वीकार करना होगा और तब वेदेतर मत के लोगों को जीवन में ईश्वरीय आनन्द की उपलब्धि एवं उसके पश्चात मुक्ति प्राप्त हो सकेगी। मेरा जन्म आज से लगभग 63 वर्श पूर्व भारत में हुआ। तब से मैं यहां रह रहा हूं। शैषव अवस्था ने माता पिता ने धर्म व रीति रिवाज सम्बन्धी जो बातें बताई व समझाईं, उन्हें उसी रूप में बिना सोचे विचारे मैंने स्वीकार कर लिया और मानता रहा। विद्यालय की शिक्षा के समय एक पड़ोसी आर्य समाजी मित्र मिल गये, 18 वर्श की आयु में उनके साथ सायंकाल भ्रमण की आदत पड़ गई। यदा–कदा वह यत्र–तत्र हो रहे प्रवचनों में ले जाया करते थे और आर्य समाजी दृश्टिकोण से उनकी समालोचना करते थे। आरम्भ में पौराणिक संस्कारों के कारण मुझे वह प्रायः उचित नहीं लगती थी। यदा–कदा आर्य समाज भी जाना होता था और वहां यज्ञ, भजन व विद्वानों के विचारों को सुना और पुस्तकें कय करके स्वाध्याय किया। धीरे–धीरे पता नहीं कब आर्य समाज के वेद संबंधी विचारों ने मेरे मन व मस्तिश्क पर अधिकार कर लिया और पौराणिक अज्ञान–अन्धविश्वास व कुरीतियों से युक्त बातें मन से दूर चली गईं। मेरा अब दृण विश्वास है कि ईश्वर की सगुण व निर्गुण भक्ति के स्थान पर पौराणिक रीति से मैं जो मूर्ति पूजा व कर्मकाण्ड आदि करता था, वह अधिकांश असत्य, अनावश्यक और अनुचित था। आज मैं आत्मिक सन्तोश का अनुभव करता हूं। यह सब मुझे सत्यार्थ प्रकाश आदि अनेक ग्रन्थों के स्वाध्याय व विद्वानों के प्रवचनों तथा चिन्तन व मनन से प्राप्त हुआ है। आत्मा व मन इस बात से सन्तुश्ट हैं कि हमें इस संसार व ईश्वर के बारे में यथार्थ ज्ञान है। जो ज्ञान व संस्कार

अब हमारे हैं वह भारत के सभी लोगों व विश्व के लोगों के नहीं है। वहां इस प्रकार के सत्य व परम उपयोगी विचारों को जानने व उसके प्रचार प्रसार की किसी प्रकार की व्यवस्था नहीं है। यदि समुचित व्यवस्था होती तो मुझे लगता है कि विद्यार्थी काल में जिस प्रकार से मेरा बौद्धिक मतान्तरण हुआ, उसी प्रकार शायद संसार के सभी लोगों का हो सकता था। मुझे इन विचारों को मानने या अपनाने के लिए किसी ने जोर–जबरस्ती नहीं की अपितु यह स्वतः हुआ और तब हुआ जब मेरी आत्मा ने उसे स्वीकार किया। मुझे लगता है और यह वास्तविकता है कि संसार में वैदिक विचारों, सिद्धान्तों व मान्यताओं का प्रचार नगण्य है एवं दूसरे मतानुयायी योजनाबद्ध रूप से वेद एवं पौराणिक लोगों को मतान्तरित कर उन्हें स्वमत में दीक्षित कर इस देश की राजनैतिक सत्ता को हथिया कर अपना छद्म उद्देश्य पूरा करना चाहते हैं। इसके लिए वह अन्दर ही अन्दर सब प्रकार के कुत्सित कार्य भी करते हैं परन्तु बाहर से स्वयं को बहुत ही अच्छा व मानवता का सेवक दिखाते हैं। मुझे लगता है कि मेरा कर्तव्य है कि ईश्वर से प्राप्त वेद एवं वैदिक ज्ञान की रक्षा होनी चाहिये, कहीं यह विलुप्त न हो जाये। इसके लिए हमें हर सम्भव प्रयास करना है। अपनों को मनाना है व उन्हें इस विश्व–वरेण्य संस्कषति के महत्व को हष्दयगंम कराना है। हमें विश्व के अन्य मतावलम्बी बन्ध ाुओं को भी आमन्त्रित करना है कि वह भी ईश्वर, जीवात्मा के स्वरूप पर हमसे प्रेमपूर्वक संवाद व चर्चा करें। यदि उन्हें हमारे विचारों में कहीं कोई कमी दषश्टिगोचर होती है तो वह हमें बतायें, हम सदिच्छा से उसे समझ कर उसका समाधान व निराकरण करेंगे। यह तभी सम्भव होगा जब हम स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरूदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी अमर स्वामी, पं. शान्तिप्रकाश, पं. गणपति शर्मा जैसा स्वयं को बनायें। इसके लिए हमें अपने गष्हस्थ जीवन में भी और उसके पश्चात 50 या 60 वर्श की आयु में गष्हस्थ व व्यवसाय से सेवानिवष्त्त होकर घर में रहते हुए या वानप्रस्थी की भांति इस कार्य में जुटना पड़ेगा। गष्हस्थ व सेवाकाल व व्यवसाय के काल में भी इस कार्य को यथाशक्ति करना होगा तभी सेवा निवष्त्ति के पश्चात यह काम कर सकेंगे। यदि इसकी उपेक्षा करेंगे तो वह दिन दोबारा आ सकता है जब बौद्धों के प्रचार की भांति हमारे सभी बन्धु भिन्न–2 मतों के अनुयायी बन जायेंगे और उन मतों के लोग हमारी वैदिक धर्म व संस्कषति को नेस्तनाबूद कर देंगे। ऐसा पहले भी करने के प्रयास हुए हैं, वह आंशिक सफल भी रहे हैं, जिससे हमें अपूर्व हानि हुई है अन्यथा आज का इतिहास कुछ और ही होता। इस बात की कोई गारण्टी नहीं है और न हो सकती है, कि ऐसा कभी नहीं होगा, अतः सावध ाान होकर अपने कर्तव्य का पालन जैसा कि हमारे पूर्व पुरूशों ने किया है, हमें भी करना है। शोशण व अन्याय समाप्त होगा और हमारा देश ऐसा होगा जिससे न केवल हम ही प्रसन्न व सन्तुश्ट होगें अपितु समस्त देशवासी सुःख से अपना जीवन व्यतीत कर सकेंगे। आईये, इस विशय पर चिन्तन करते हैं और जिससे जो बन सकता है उसके लिए अपने जीवन से समय निकाल कर व अपनी सामर्थ्य के अनुसार धन का दान कर अपना कर्तव्य निभायें। हम सत्य पर हैं अतः ईश्वर हमारे साथ है, साथ रहेगा, साथ देगा, इसकी आशंका नहीं होनी चाहिये।

వేదిక్ ఆఫ్ కల్చర్ అండ్ సివిలైజేషన్ పుస్తకాన్ని ఆవిష్కరిస్తున్న మంత్రులు దత్తాత్రేయ, నాయిని నర్సింహారెడ్డి తదితరులు

సంస్కృతిని పరిరక్షించుకోవాలి

కేంద్రమంత్రి దత్తాత్రేయ

హిమాయత్‌నగర్: మనదేశ సంస్కృతి సంప్రదాయాలను పరిర క్షించుకోవాల్సిన బాధ్యత మనందరిపై ఉందని కేంద్రం మంత్రి బండారు దత్తాత్రేయ అన్నారు. ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆధ్వర్యంలో ఆదివారం రాత్రి నారాయణగూడలోని పండిట్ నరేంద్రభవన్‌లో పద్మశ్రీ అవార్డు గ్రహీత డాక్టర్ టీవీ.నారాయణ అభినందన సత్కారసభ నిర్వహించారు. ముఖ్యఅతిథిగా పాల్గొన్న దత్తాత్రేయ మాట్లాడుతూ, ఆర్యసమాజ్, సేవాభారతిల ద్వారా ఆయన ఎంతో సేవచేశారని అభినందించారు. యువత విదేశీ సంస్కృతికి బానిస పుతూ దేశ సంస్కృతిని విస్మరిస్తోందని ఆందోళన వ్యక్తం చేశారు. రాష్ట్ర హోంమంత్రి నాయిని నర్సింహారెడ్డి మాట్లాడుతూ, నేడు ప్రజాస్వామ్యం దేశంలో నిలబడిందంటే. దానికి ఆర్యసమాజ్ నేతలే కారణమన్నారు. న్యాయ, సామాజిక పోరాటాలలో ప్రజలకు ఆర్యస మాజ్ నాయకులు అండగా నిలబడ్డారని అన్నారు. ఈ సందర్భంగా పండిట్ గంగప్రసాద్ ఉపాధ్యాయ రచించిన వేదిక్ ఆఫ్ కల్చర్ అండ్ సివిలైజేషన్ పుస్తకాన్ని ఆవిష్కరించారు. ఆర్యప్రతినిధి సభ ప్రధాన్ విఠల్‌రావు ఆర్య, స్వామి బ్రహ్మానందజీ, హరికిషన్ వేదా లంకార్, అశోక్‌కుమార్ శ్రీవాస్తవ తదితరులు పాల్గొన్నారు.

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना की ओर से पूर्व प्रधान आर्य समाज इन्दूर व आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री के. सूर्य प्रकाश जी की माता

श्रीमती राजूबाई को विनम्र श्रद्धांजलि

आर्य समाज के इन्दूर के पूर्व प्रधान व वर्तमान में आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के उपप्रधान श्री के. सूर्यप्रकाशजी की माताजी श्रीमती राजूबाई का 23 फरवरी 2016 को अकस्मात निधन हो गया। माताजी की उम्र पूरे १०० वर्ष की थी। सूर्यप्रकाशजी की माताजी का परिवार के लिए और आर्य समाज की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनका अकस्मात निधन परिवार के लिए व समाज के लिए बहुत ही क्षतिपूर्ण है और इस कमी को पूरा करना असम्भव है। आर्य प्रतिनिधि सभा माताजी के निधन पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती है और परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति और सद्गति प्रदान करे तथा परिवार जनों को साहस प्रदान करें।

'मैं ब्रह्म नहीं, अल्प, चेतन व बद्ध जीवात्मा हूं'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

हम इस जड़–चेतन संसार में रहते हैं। यह सारा जगत हमारा परिवार है। सभी जड़ पदार्थ हमें अपने गुणों से लाभ पहुंचाते हैं। हमें पदार्थों के गुणों को जानना है और जानकर उनका सदुपयोग करना है। हमारे वैज्ञानिकों ने यह कार्य सरल कर दिया है। उन्होंने जड़ पदार्थों को अन्यों की तुलना में कहीं अधिक जाना है और सभी पदार्थों के गुणों को जानकर उन्हें मानव जीवन को सहयोगी बनाने के लिए अनेक सुख–सुविधाओं की वस्तुएं बनाई हैं। उनके इस कार्य से हमारे पर्यावरण को भी हानि पहुंची है जिससे सारा संसार त्रस्त वा चिन्तित है। इससे बचने के उपाय खोजे जा रहे हैं। इसके साथ ही वैज्ञानिकों ने मानवता के विनाश की भी पर्याप्त सामग्री का निर्माण किया है जिसे युद्ध में प्रयोग होने वाली सामग्री कहा जा सकता है। हानिकारक रायायनिक खाद भी इनमें सम्मिलित है। यह सब होने पर भी हमारे वैज्ञानिक एवं हमारे मत–मतान्तरों के आचार्य मनुष्य व इसमें निवास करने वाली जीवात्मा को इसके के यथार्थ स्वरुप में अभी तक जान नहीं सके हैं। विज्ञान का क्षेत्र केवल भौतिक पदार्थों तक सीमित है। वर्तमान संसार में विज्ञान का विकास व उन्नति प्रायः पश्चिम के देशों में ही अधिक हुई है। वहां जो मत–मतान्तर प्रचलित हैं, वह एकांगी होने व ईश्वर व जीवात्मा के सत्यस्वरुप को पूर्णतया न जानने के कारण वैज्ञानिकों को सन्तुष्ट व सहमत नहीं कर सके जिससे वैज्ञानिकों ने ईश्वर व जीवात्मा के पथ्थक, अनादि, अमर, अविनाशी स्वरुप को मानना ही छोड़ दिया। इसके विपरीत आर्यावर्त्त भारत में आदि काल से ही ईश्वरीय ज्ञान वेदों की सुलभता के कारण यहां के ऋषि–मुनि व शिक्षित लोग ईश्वर व जीवात्मा के सत्यस्वरुप को जानते आये हैं और आत्मा की उन्नति के लिए वेद एवं वैदिक साहित्य के अनुसार जीवनयापन करते रहे हैं। महाभारत के बाद परा व अपरा अर्थात् आध्यात्मिक एवं भौतिक ज्ञान व विद्याओं का प्रचार प्रसार न होने के कारण अज्ञान व अन्धविश्वास उत्पन्न हो गये जिसके परिणामस्वरुप भारत और दूरस्थ देशों में अज्ञान व अन्धविश्वास पर आधारित नाना मत–मतान्तर उत्पन्न हो गये। इस कारण ईश्वर व जीवात्मा का सत्यस्वरुप लोगों की दर्षष्टि से ओझल हो गया। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध (1863–1883) में महर्षि दयानन्द ने व उसके बाद उनके अनुयायियों ने अपने पुरुषार्थ से वेदों के यथार्थ ज्ञान को प्राप्त किया और उसे देश व विश्व में फैलाया जिससे लोगों को ईश्वर व जीवात्मा सहित प्रकर्षति के यथार्थ स्वरुप का ज्ञान प्राप्त हुआ। इससे लाभ यह हुआ कि मनुष्य योनी में जीवात्मा अपने कर्तव्य–कर्मों का निर्धारण कर जीवन के लक्ष्य ध र्म–अर्थ–काम–मोक्ष की सिद्धि के लिए प्रयत्न करते हुए इन्हें प्राप्त कर सकता है। लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व भारत में स्वामी शंकराचार्य जी हुए हैं जिन्होंने अद्वैत मत का प्रचार किया। उनके समय में बौद्ध व जैन मत ने अपनी जड़े जमा ली थी और बहुत से वैदिक धर्मी लोग इन मतों से आकर्षित होकर इनकी शरण में जा चुके थे। यह मत वैदिक मतावलम्बियों के समान ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते थे। इन मतों में ईश्वर के अस्तित्व के प्रति घोर अन्धकार होने के कारण इन्होंने ईश्वर को मानता व उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना छोड़ दिया था। स्वामी शंकराचार्य जी ने इनसे ईश्वर के स्वरुप को स्वीकार कराने के लिए शास्त्रार्थ किये और संसार में केवल एक ईश्वर ही है, अन्य कोई पदार्थ यथा जीवात्मा व भौतिक पदार्थ जैसे यह दीखते हैं, नहीं है, का प्रचार किया। वह शास्त्रार्थ में इन मतों से विजयी हो गये जिससे उनके मत को सभी बौद्ध व जैन मतानुयायियों को स्वीकार करना पड़ा था। स्वामी शंकराचार्य जी जीवात्मा को ईश्वर का अंश मानते थे जो अज्ञानता के कारण ईश्वर से पृथक व्यवहार करता है तथा ज्ञान हो जाने वा अविद्या के नष्ट होने पर ईश्वर में ही मिल जाता या उसका उसमें विलय और समावेश हो जाता है। फिर उस जीवात्मा वा ईश्वरांश का पृथक अस्तित्व नहीं रहता। प्रकृति व भौतिक पदार्थों के पृथक अस्तित्व को न स्वीकार कर वह इसे ईश्वर की माया मानते थे जो कि वस्तुतः अस्तित्वहीन पदार्थ है। महर्षि दयानन्द सत्य ज्ञान व विद्याओं के जिज्ञासु थे। उन्हें गुरु विरजानन्द जी से जो ज्ञान व शिक्षा मिली थी वह यह थी कि ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति इन तीन पृथक–पृथक पदार्थों का अस्तित्व है। इन तीन शाश्वत व सनातन पदार्थो को त्रैतवाद के नाम से जाना व पुकारा जाता है। सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द ने इस अद्वैतवाद से जुड़े प्रश्नों को प्रस्तुत कर उनका समाधान किया है। इस लेख में भी हम वैदिक ज्ञान के आलोक में कुछ प्रश्नों के समाधान की चर्चा कर रहे हैं।

अद्वैतवादियों का जीव के विषय में पक्ष है कि जीव व ब्रह्म, पथ्थक नहीं अपितु एक हैं जिनकी संज्ञा ब्रह्म या ईश्वर है। इसलिए वह जीव व जीवात्मा का निरोध व निषेध करते हैं। वह कहते हैं कि जीव के अस्तित्व न होने से उसके आवरण में आने, जन्म लेने व बन्धन में फंसने का प्रश्न ही नहीं है। उनके अनुसार जीवात्मा ईश्वर के गुणों व उसके स्वरुप का साधक न होकर उसे ईश्वर वा ब्रह्म की साधना की किंचित अपेक्षा नहीं है। जीव न बन्धन से छूटने की इच्छा करता है और न जीव की कभी मुक्ति होती है क्योंकि जब जीव है ही नहीं तो उसका बन्धन मानना ही गलत है और जब जीव का बन्धन हुआ ही नही तो मुक्ति को मानने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। अद्वैतवादी मत के इन विचारों व मान्तयाओं

को रेखांकित कर महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में उनका उत्तर वा समाधान प्रस्तुत किया है। वह कहते हैं कि नवीन वेदान्तियों का यह कहना सत्य नहीं है क्योंकि जीव का स्वरुप अल्प होता है, इसलिए वह आवरण में आता है। यह अल्प परिमाण व आवरण ऐसा है कि इसके कारण जीव को ईश्वर व संसार का यथार्थ ज्ञान नहीं होता। इस अल्प स्वरुप व परिमाण वाला होने से जीव का मुनष्य आदि अनेक योनियों में जन्म होता है और वह जीव पाप रूप कर्मों को करके फल भोगरूप बन्धनों में फंसता है। इन बन्धनों से छूटने हेतु जीव अनेक साधनों को करता है। दुःख किसी भी जीवात्मा की पसन्द नहीं है, इस कारण सभी जीव दुःखों से छूटने के लिए प्रयत्न करते हैं। दुःखों से छूटने के लिए जीव जिन–जिन वेद व शास्त्र विहित साधनों का आश्रय लेता है, उनसे वह दुःखों से निवष्त्त होते हुए मुक्ति को प्राप्त होकर परमानन्द परमेश्वर को प्राप्त होता है व सुख व आनन्द का भोग करता है।

अद्वैतवादियों का जीव के विषय में पक्ष है कि जीव व ब्रह्म, पष्थक नहीं अपितु एक हैं जिनकी संज्ञा ब्रह्म या ईश्वर है। इसलिए वह जीव व जीवात्मा का निरोध व निषेध करते हैं। वह कहते हैं कि जीव के अस्तित्व न होने से उसके आवरण में आने, जन्म लेने व बन्धन में फंसने का प्रश्न ही नहीं है। उनके अनुसार जीवात्मा ईश्वर के गुणों व उसके स्वरुप का साधक न होकर उसे ईश्वर वा ब्रह्म की साधना की किंचित अपेक्षा नहीं है। जीव न बन्धन से छूटने की इच्छा करता है और न जीव की कभी मुक्ति होती है क्योंकि जब जीव है ही नहीं तो उसका बन्धन मानना ही गलत है और जब जीव का बन्धन हुआ ही नही तो मुक्ति को मानने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। अद्वैतवादी मत के इन विचारों व मान्तयाओं को रेखांकित कर महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में उनका उत्तर वा समाधान प्रस्तुत किया है। वह कहते हैं कि नवीन वेदान्तियों का यह कहना सत्य नहीं है क्योंकि जीव का स्वरुप अल्प होता है, इसलिए वह आवरण में आता है। यह अल्प परिमाण व आवरण ऐसा है कि इसके कारण जीव को ईश्वर व संसार का यथार्थ ज्ञान नहीं होता। इस अल्प स्वरुप व परिमाण वाला होने से जीव का मुनष्य आदि अनेक योनियों में जन्म होता है और वह जीव पाप रूप कर्मों को करके फल भोगरूप बन्धनों में फंसता है। इन बन्धनों से छूटने हेतु जीव अनेक साधनों को करता है। दुःख किसी भी जीवात्मा की पसन्द नहीं है, इस कारण सभी जीव दुःखों से छूटने के लिए प्रयत्न करते हैं। दुःखों से छूटने के लिए जीव जिन–जिन वेद व शास्त्र विहित साधनों का आश्रय लेता है, उनसे वह दुःखों से निवष्त्त होते हुए मुक्ति को प्राप्त होकर परमानन्द परमेश्वर को प्राप्त होता है व सुख व आनन्द का भोग करता है।

अद्वैतवादी प्रश्न करते हैं कि सुख व दुःखों को भोगना देह और अन्तःकरण के धर्म हैं, जीव के नहीं। उनका कहना है कि जीव तो पाप पुण्य से रहित साक्षी मात्र है। शीत व उष्णता का अनुभव उनके अनुसार शरीरादि के धर्म्म हैं, आत्मा तो निर्लेप है। इन आरोपों व शंकाओं का वैदिक समाधान है कि देह और अन्तःकरण जड़ पदार्थ हैं और यह चेतन तत्व जीवात्मा से पृथक हैं। इन देह और अन्तःकरण को शीत व उष्णता का भोग व अनुभव नहीं होता ऐसे ही कि जैसे पत्थर को शीतलता और उष्णता का अनुभव व भोग नहीं होता है। जो चेतन मनुष्यादि प्राणी शीत व उष्ण पदार्थों को स्पर्श करता है, उसी को इनका अनुभव वा भोग प्राप्त होता है। पत्थर के समान ही मनुष्य के प्राण भी जड़ हैं। न प्राणों को भूख लगती है न पिपासा, किन्तु प्राण वाले जीवात्मा को क्षुधा व तृषा (भूख व प्यास) लगती है। प्राणों के समान ही मनुष्य का मन भी जड़ है। न मन को हर्ष, न शोक हो सकता है किन्तु मन से हर्ष, शोक, दुःख, सुख का भोग मन अपने लिए नहीं अपितु जीव को कराता है वा जीव करता है। जैसे बाह्य क्षोत्रादि इन्द्रियों से अच्छे बुरे शब्दादि विषयों का ग्रहण करके जीव सुखी–दुःखी होता है वैसे ही अन्तःकरण अर्थात् मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार से संकल्प, विकल्प, निश्चय, स्मरण और अभिमान का करने वाला 'जीवात्मा' दण्ड और मान्य का भागी होता है। उदाहरण के रुप में जैसे तलवार से मारने वाला 'मनुष्य वा जीवात्मा' दण्डनीय होता है, तलवार नहीं होती वैसे ही देहेन्द्रिय अन्तःकरण और प्राणरूप साधनों से अच्छे बुरे कर्मों का कर्त्ता जीव सुख–दुःख का भोक्ता है। जीव कर्मों का साक्षी नहीं, किन्तु कर्त्ता व भोक्ता है। जीवात्मा ही अन्तःकरण व इन्द्रियों को भोग में प्रवृत्त करता है इसलिये कर्मों के पाप व पुण्य के अनुसार इनका भोक्ता भी जीवात्मा ही होता है। जीवात्मा वा मनुष्य के कर्मों का साक्षी तो एक अद्वितीय परमात्मा है। जो कर्म करने वाला जीव है वही कर्मों में लिप्त होता है। जीवात्मा न तो ईश्वर है और न जीवों अर्थात् अपने ही किए कर्मों का साक्षी मात्र हैं। ईश्वर ही साक्षी है और जीवात्मा कर्त्ता, भोक्ता व साक्षी है।

इस विवेचन से जीवात्मा का ईश्वर से पष्थक अस्तित्व सिद्ध होता है। जीवात्मा साक्षी नहीं अपितु पाप–पुण्य रूपी कर्मों का कर्ता है और ईश्वर उसके कर्मों का साक्षी व फल प्रदाता है। मैं, मुनष्य, जीवात्मा हूं। मेरा शरीर मुझ जीवात्मा का शरीर है जो कर्मो को करने व फल भोगने के लिए ईश्वर से मिला है। जीवात्मा से शरीर व इसकी इन्द्रियों को प्रेरित कर कर्मों को करके मैं इनके फल भोग में फंसता हूं। सभी मनुष्यों को निरासक्त भाव से ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना तथा दैनिक अग्निहोत्र आदि वेदविहित पुण्य कर्मों को करके अपनी जीवात्मा को बन्धन व दुःखों से मुक्त करना चाहिए और साथ हि परमानन्द स्वरूप ईश्वर की प्राप्ति के लिए साधन व प्रयत्न करने चाहिये, तथा 'मैं ब्रह्म हूं', इस मिथ्या उक्ति से बचना चाहिये।।

मुक्त करना चाहिए और साथ हि परमानन्द स्वरूप ईश्वर की प्राप्ति के लिए साधन व प्रयत्न करने चाहिये, तथा 'मैं ब्रह्म हूं', इस मिथ्या उक्ति से बचना चाहिये।।

गृहस्थ

व्याख्याता : पं. गुरुदत्तजी 'विद्यार्थी'

गृहस्थ के विषय में ऋग्वेद के पहले मण्डल, १० वें अनुवाक ५० वें सूक्त के पहले, दूसरे और तीसरे मंत्र की वैज्ञानिक व्याख्या ।

उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः दृशे विश्वाय सूर्यम् ।

गृहस्थाश्रम के विषय पर ऋग्वेद के पचासवें सूक्त के कुछ मंत्रों की व्याख्या आराम्भ करने के पहले, मैं उन प्राचीन ऋषियों के साथ न्याय करतें हुए, जो उस काल में रहते थे जब कि, जितना इस समय वायबल, जिन्दावस्था, और कुरान का पूजन होता है उससे अधिक सरल, निर्व्याज और यथार्थ रीति से वेद का पूजन होता था और जबकि उसका अधिक ठीक अर्थ समझा जाता था, हाँ उन्हीं ऋषियों के साथ न्याय करते हुए यह कह देना चाहता हूँ कि प्रकृति की अनेक परिस्फुट और अधिक गहन शक्तियाँ उनके मनों के लिये सीढ़ियाँ थीं, जिनके द्वारा कि वे भौतिक पदार्थों की निचली गहराइयों से दिव्य ध्यान की स्वर्गीय ऊँचाइयों तक चढ़ते थे । उनका विचार भौतिक शक्तियों के सोपान पर सुपरिचित रीति से चढ़ना रहता था यहां तक कि उसे दिव्य सत्ता की झलक दृष्टिगोचर हो जाती थी । इस प्रकार प्राप्त किये हु प्रकाश के साथ पुष्ट होकर वह उसी मार्ग से बापस लौट आता था और अपने भाइयों अर्थात् सारी मानव-जाति को उस उदारता का भाग देता था । मैं कहता हूँ कि जब कि मैं इस स्वर में बोल रहा हूँ मैं अपने निज के अनिश्चित, अनियत भावों, अपनी चञ्चल और संकीर्ण कल्पना की फुसफुसाहटों का प्रकाश नहीं कर रहा । जातीय अभिमान, पक्षपात या रिवाज की वेदी पर बलिदान रूप से कोई श्लाघा के शब्द नहीं । प्रत्युत इसमें सन्देह नहीं कि जो उच्च जीवन ऋषि बिताया करते थे, उनका यह निर्व्याज पर अधूरा वर्णन है । परन्तु सृष्टि के आरम्भ में होने वाले चार ऋषियों अग्नि, बायु, आदित्य और अंगिरा की व्यवस्था अधिक उच्च और विचित्र रीति से रमणीय थी । आर्यों के विश्वासानुसार इन ऋषियों की मनः शक्तियाँ वेद के प्रकाश से प्रकाशित थीं । सिर को चकरा देने वाली ऊँचाइयाँ जिन पर बिना किसी विभ्रान्ति के ऋषियों के विचार चढ़ा करते थे, टेढ़े-मेढ़े गोरख धन्धे और प्रसन्न होकर दिव्य संकल्प की एकता का पता लगाया करती थीं, ये ऐसी सच्चाइयाँ हैं जिन को हम सभ्यता के युग, उन्नीसवीं शताब्दी के मुद्दध दुलारे अनात्मवादी विज्ञान की गोद में पले हुए और युक्ति और अनुमान की कठिन रीतियों द्वारा आविष्कृत तथा जुदा-जुदा सच्चाइयों के कोयलामय भोजन और घटनाप्रधान कल्पनाओं और प्रतिज्ञाओं के शोरामय खाद्यों द्वारा आश्रित भारी भारी सच्चाइयों के दूध से पोषित दुलारे-सुगमता से समझ नहीं सकते । इन ऋषियों की सत्यानुरागिनी, काव्यप्रेमी, और सौंदर्य प्रशंसक प्रकृति आधुनिक लोगों के लक्ष्मी पूजक, व्यावहारिक, उपयोग प्रशंसक और कठोर मनों से बहुत भिन्न थीं । तब कोई आश्चर्य की बात नहीं जो कि इस खोज उद्योगिता के युग में हम वैदिक ज्ञान के इतने थोड़े वृत्तिकार पाते हैं । साम्प्रदायिक मूर्ख और धार्मिक पक्षपात का चश्मा लगाने वाले सच्चाई को इसके अनुगामियों या भक्तों की संख्या से मापते हैं । अतएव ईसाई लोग कह सकते हैं कि संसार में हमारी सबसे बढ़ी हुई संख्या इस बात का प्रमाण है कि ईसाई मत ही एक ऐसा विधान है जिसके सारे संसार में फैलाने की परमेश्वर ने व्यवस्था की है । पर वैदिक सच्चाई की बात इससे सर्वथा भिन्न है । यह सच्चाई नित्य है । यह अन्य मतों की तरह आज या कल की उत्पत्ति नहीं । वैदिक सच्चाई का प्रमाण इस के बढ़ने और फैलने की शक्ति नहीं प्रत्युत इसकी आज और कल एक समान बना रहने की अन्तर्निरूढ़ शक्ति है । मनुष्य और समाजें पन्थ और सम्प्रदाय संसार के दिवस की केवल नश्वर चीजें हैं । वज्र की चट्टान पर ऊँची बैठी हुई सचाई ही नित्य और श्रेष्ठ है ।

जगदीश्वर और प्रकृति की यही सच्चाई आदि चार ऋषियों को समझाने के लिये दी गई थी । हमारी वेद ज्ञान से शून्य आँखें चाहे इधर उधर चट्टानों से वनस्पतियों तक और वनस्पतियों से मनुष्यों तक एकता ढूँढती फिरें और उन्हें इसमें सफलता न हो, पर उन चार ऋषियों के वेदज्ञान प्राप्त मन प्रत्येक पदार्थ में दिव्य मन की एकता को देख सकते थे । खनिज पदार्थ वनस्पतियों और पशु सब उनके लिये एक पुस्तक के समान थे जिसमें कि उन्हें केवल परमेश्वर की शक्ति, न्याय और प्रज्ञा का ही पाठ पढ़ने को था । ईश्वरीय ज्ञान की उच्चता के कारण उनके मानसिक नेत्रों के सामने प्रकृति चित्र सुदूर भविष्य में मानवी संस्थाओं, सिद्धियों, और आकांक्षाओं के चित्र पहले से आ उपस्थित होते थे, और इन सब में वे परम पिता की अन्तरात्मा को पैतृक चिन्ता के साथ अपनी सन्तान के मंगल और आनन्द के लिये सनातन संकल्पों पर विचार करता हुआ देखते थे । पाठक, एकबार कल्पना कीजिये की आप इस उन्नत अवस्था में हैं तब ही आप वैदिक मंत्रों का गहरा अर्थ समझने और ग्रहण करने के योग्य होंगे । यह गहरा अर्थ सब कहीं आध्यात्मिक है । मंत्र और मंत्र के बीच एक सूक्ष्म और बहुत श्रेष्ठ शृंखला है । यह केवल ऐसी अभ्युदय की घड़ियों में ही देखी जा सकती है ।

हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि आन्तरिक का समझना सदा अधिक कठिन होता है । आधुनिक पंडित, जिसकी इन्द्रियों की शक्तियाँ भौतिक दृश्य चमत्कारों में पैदा होने वाले परिवर्तनों और रूपों को ध्यानपूर्वक देखने के लिए सिघाई गई हैं । चाहे मंत्र और मंत्र के बीच कोई सम्बन्ध और संगति न देखे । उसे वेद भले ही उन अलग प्रार्थनाओं का संग्रह मालूम हों जो कि वायु और वर्षा आदि प्रकृति की शक्तियों को देवता समझ कर उनके सामने की गई थीं। लेकिन एक सच्चे और सोद्यम जिज्ञासु के लिये, जो मेरी ऊपर वर्णित उन्नत अवस्था में प्रविष्ट हो चुका है, मंत्रों के अन्वय में वह युक्ति-सिद्ध संगति और दार्शनिक परम्परा पाई जाती है जिसे केवल ईश्वरीय ही कहा जा सकता है । वेदों का अध्ययन हमें उसी भाव से करना चाहिये जिसका नमूना ५० वाँ सूक्त उपस्थित करता है । मैं पहले कह चुका हूँ कि ऋषियों के मतानुसार ब्रह्माण्ड एक सीढ़ी है, जिसके साथ

साथ वेदज्ञान प्राप्त मन, ईश्वर-चिन्तन तक चढ़ता है । ऋग्वेद के ३०वें सूक्त के इस मंत्र का विषय ठीक यही है ।

अन्धेरी रात्रि में जब कि वर्षा हो रही थी और अन्धेरी चल रही थी, निःशब्दता और गहरी निद्रा के समय एक चोर एक शान्त परिवार के धनागार में प्रविष्ट हुआ और सब बहुमूल्य रत्न और सम्पत्ति चुरा ले गया । माल पाने की खुशी में वह बीस मील गीली भूमि पर ही वापस दौड़ आया । वहाँ आकर वह समझने लगा कि अब मुझे पकड़ने वाला कोई नहीं । पर सवेरा हुआ और घर का स्वामी जागा । उसे अपने घर की चोरी का पता लगा । निर्भयता और स्थिरता के साथ, पर शान्तचित्त होकर, वह चोर के पद चिह्नों पर चल पड़ा और शनैः शनैः परन्तु निश्चिन्त रूप से समागम स्थान पर जा पहुँचा और उसने चोर को चुराये हुए धन सहित पकड़ लिया । यह एक उपमिति मात्र है । मुझे चोरी और सम्पत्ति से काम नहीं । मेरा सम्बन्ध, किसी चोर के पदचिह्नों से नहीं प्रत्युत ब्रह्मांड के आकार पर बने हुए स्त्रष्टा के पद-चिह्नों से है । वह बुद्धिमान् जिसने अपनी बुद्धि को विश्वजनीन शुभेच्छा से प्रकाशित कर लिया है, (सजोष धीराः) जो आदिकरण को मालूम करने पर झुका हुआ है, वह अपनी खोज आरम्भ करता है और शनैः शनैः, पर दृढ़ता से प्रकृति की स्त्रोत की ओर चलता हुआ परमेश्वर पर जाकर ठहर जाता है । वहाँ, बुद्धि की जिज्ञासु और वेधक कार्य शक्तियाँ ठण्डी होकर तृप्त हो जाती हैं । और इस प्रकार पाये हुए खजाने का उपभोग करती हुई शान्त विश्राम में लेट जाती हैं । ऐसे मन के लिये इस विश्व के भिन्न-भिन्न पदार्थ क्या हैं ? वे जगदीश के पदचिन्ह हैं, वे बुद्धि की दिव्य किरणों के अपने कर्म-पथ के साथ-साथ बनाए हुए निशान हैं । जैसा कि वेद मंत्र में वर्मित है । वे ठीक वैसे ही (केतवः) झण्डे, मार्ग को दिखाने वाली बल्लियां, और घाट के निशान हैं जो एक स्वर के साथ उस (त्यम्) को दिखलाते हैं जिससे कि सारा ज्ञान (जातवेदसम्) निकला है । वह (देवम्) सनातन सूर्य है जो सदैव चमकता रहता है । उसी के कारण हम विश्व के इस महान् सर्वदिग्दर्शक चित्र को देखते हैं। (दृशे विश्वाय सूर्यम्) भौतिक ब्रह्माण्ड के सूर्य की भी यही अवस्था है । क्या तुम प्रकृति की चित्र-विचित्र वस्तुओं को देखना चाहते हो, तब अन्तरिक्ष के चमत्कारों के बीच खेलनेवाली सूर्य की रश्मियों का अध्ययन करो, और देखो कि वे तुम्हें कहाँ ले जाती हैं । वे हमें सूर्य के गोले तक ले जाती हैं । वास्तव में, जो कुछ हमें दिखाई देता है, उसका कारण यही सूर्य है, क्योंकि न केवल नक्षत्रों का उपादान ही सूर्य से निकला है प्रत्युत स्वयम् वह प्रकाश भी जो नाना वर्णों और नाना रूपों वाले भैतिक पदार्थों के अस्तित्व को हम पर प्रकाशित करता है, सूर्य को ही अपना स्त्रोत-उद्भव बता रहा है । तो क्या तुम फिर विश्व दर्शन करना चाहते हो ? तब ध्यानपूर्वक देखो कि विश्व तुम्हें नक्षत्र जगत के चमत्कार-सूर्य की ओर संकेत करता है । क्या तुम अपने नश्वर जीवन के दिन शाश्वत आनन्द और शान्ति के साथ भोगना चाहते हो ? तब ध्यानपूर्वक देखो कि संसार का सारा सुख-विवाह की, गृहस्थ की, पवित्र संस्था की ओर संकेत करता है । केवल इसी संस्था से पैतृक, भ्रातृक, वैवाहिक, और संतानोचित प्रेम ठण्डा होकर परितृप्त हो जाता है, संसार में सुखी सन्तान पैदा हो सकती है । वैदिक मंत्र का यही तिहरा आशय है । यह परमेश्वर को सारे हो सकती है । वैदिक मंत्र का यही तिहरा आशय है । यह परमेश्वर को सारे कारणत्व का, सूर्य को सारे नक्षत्रजगत् और उसके वर्ण सम्बन्धी चमत्कार का और निर्मल युक्तिसंगत और आध्यात्मिक शरीर शास्त्र के आधार पर ठहरी हुई विवाह की पवित्र संस्था को पृथ्वी पर सारे सुख और आनन्द का स्त्रोत बताता है ।

अपत्ये तायवो यथा नक्षत्रा यंत्यक्तभिः।
सूराय विश्वचक्षसे ॥

अब मैं उसी सूक्त के दूसरे मंत्र पर आता हूँ । मैं कह चुका हूँ कि इस मर्त्यलोक में आनन्द की प्राप्ति विवाह की पवित्र और स्वर्गीय विधि को ठीक तौर पर पूरा करने से ही हो सकती है । इस विषय पर यहाँ लम्बा चौड़ा लिखने का मुझे प्रयोजन नहीं । यही बतला देना अच्छा होगा कि अन्य रीति से हमारे समाज को पुनर्जीवित करने के सब यत्न निष्फल हैं । क्या तुम कभी आशा कर सकते हो कि माता-पिता के अस्वाभाविक हठ से बाधित होकर लड़का और लड़की के अस्वाभाविक आयु में किये जाने वाले वर्तमान विवाहों से वीर, स्वामी-सदृश प्रतिभाशाली सन्तान पैदा हो सकती है ? ऐसी आशा रखना असम्भव के सम्भव होने की आशा रखना है । विद्या और उपदेश, शिक्षा और संगीत मनुष्य के बाह्य चरित्र को ढाल सकते हैं, पर इनका अधिक गहरे और अधिक स्थायी चरित्र पर, पैतृक या प्रकृति विषयक चरित्र पर, जो कि हमारे रक्त के साथ बहता है, जिसका हमने अपनी अस्थियों और नाड़ियों के साथ अपने लहू और मांस के साथ माता-पिता से प्राप्त किया है, कुछ असर नहीं होता । इसलिए, विश्वास करो कि हमारे समाज में जो खराबी हैं, उसका सच्चा औपध शरीरशास्त्र सम्बन्धी इलाज है । यह इलाज मजबूत होकर और आवेग के वशीभूत होकर किये गये व्यावहारिक विवाह के स्थान में पवित्र, युक्तिसंगत और यथार्थ विवाह की ईश्वरीय आज्ञा के पालन करने का आदेश देकर हमारे समाज के रोग की जड़ को काटता, और व्यक्ति और समाज को उनके जन्म से ही ढालने की परिज्ञा करता है । अच्छा तो फिर विवाह का नियम क्या है, वह कौन-सा आचरण है जिससे समाज को स्वास्थ्य सुख की प्राप्ति हो सकती है ? इस प्रश्न का उत्तर प्रकृति के अविनाशी ईश्वरीय नियमों में अंकित है। आकाश में तारिकाओं की सेना (नक्षत्राः) को ध्यानपूर्वक देखो । वे किस नियम का पालन कर रहे हैं ? जो दृश्य-चमत्कार वे उपस्थित करते हैं उनके अनुवर्तन में क्या वे नियमनिष्ठ नहीं ? प्रत्येक २४ घण्टों के बाद यथाक्रम आकाशस्थ तारागण का रात्रि से (यत्यक्तुभिः) संयोग होता है, यथाक्रम २४ में बारह घण्टों के लिए (सूराय विश्व चक्षसे) सूर्य के सहवास से इनका वियोग होता है । विवाहित लोगों को इससे शिक्षा मिलती है । उन्हें इस पर विचार करके अपने लिये पुण्यशीलता का मार्ग निकाल लेना चाहिये । अब इस वायुमण्डल के आवरण का अध्ययन कीजिये । यह किस नियम के अधीन है ? यथाक्रम प्रतिवर्ष के उपरान्त जल बरसाने वाला मानसून वायु बहता है, यथाक्रम छः मास तक हवाएँ एक ही दिशा में चलती रहती हैं । विवाहित स्त्री-पुरुष के लिये ये एक शिक्षा दे रही हैं । शिक्षा यह है कि जिस प्रकार तारामय आकाश प्रत्येक १२ घण्टों के लिये

अपने-आप को सूर्य के प्रकाश से अलग कर लेता है उसी प्रकार विवाहित स्त्री-पुरुष भी दिन काल में एक दूसरे से अलग-अलग रहें। उनके लिये दूसरी शिक्षा यह है कि जिस प्रकार दिन और रात, व्यापारी हवाएँ और वर्षा लाने वाली हवाएँ अपने अनुवर्तन के नियत कालिक नियमों का पालन करती हैं वैसे ही वे भी ऋतुगामी हों। यदि इन नियमों का यत्नपूर्वक पालन किया जाये तो संसार में अपूर्व आनन्द और स्वास्थ्य का संचार हो जायगा। निवास के लिये यह पृथ्वी एक सुन्दर वाटिका बन जायेगी। मुसलमानों के वहिश्त (स्वर्ग) या ईसाइयों के नन्दनवन (पैराडाइज) से भी, (जिस में सब कहीं सोने का ही कठोर फर्श बँधा है, और कठोरता से थककर आराम लेने के लिये कोई कोमल गद्दी नहीं) अधिक मनोहर अकल्पित हो जायगी। इस स्वाभाविक, आध्यात्मिक और शरीरशास्त्र के अनुकूल विवाह के साथ उन पाशविक विवाहों की तुलना करो जो अगणित संख्या में प्रतिदिन हमारे देश में होते हैं, और जिन पर हमारे सुधारकों को न हँसी ही आती है और न ही उन्हें कभी ध्यान ही आता है। मैं अपने सदृश इन्द्रियों वाले एक जीव को संसार में लाने से बढ़कर भारी और कोई जिम्मेदारी नहीं समझता। कितने व्यक्ति हैं जो इस उत्तरदायित्व का अनुभव करते हैं ? कितने थोड़े बच्चे हैं जिन को माता-पिता ने स्वेच्छानुसार, जान बूझकर विवेकपूर्ण पैदा किया है ? कितने बच्चे कामाग्नि, अन्ध-आवेग, आकस्मिक समागम का फल हैं ? यह बातें हमारे अनेक कोमल प्रकृति पाठकों को चाहे अश्लील मालूम हों, पर मनुष्य प्रकृति का प्रत्येक भाग पवित्र है। यह चाहता है कि प्रत्येक दिशा में इसके नियमों का पालन हो। यह किसी पंथ या व्यक्तित्व का सम्मान नहीं करता। इसलिये हमें ऋतुगामी होने का नियम सीखना चाहिये और उस सुख का अनुभव करना चाहिये जो कि इन मंत्रों में वर्णित ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार हमारे लिये रखा हुआ है। मैं चाहता हूँ कि विवाह के इस विषय को छोड़ने से पहले अपने पाठकों के मन पर एक और सच्चाई अंकित कर दूँ। यह सच्चाई कुछ कम महत्त्व की नहीं, इस सूक्त के तीसरे मंत्र का विषय यही है। वेदों के मधुर स्वरों के सिवा और कौन-सी भाषा सच्चाई को पर्याप्त रीति से प्रकट कर सकती है। मंत्र के शब्द ये हैं :-

अदृश्रमस्य केतवो विरश्मयो जनां अनु।
भ्राजन्तो अग्नयो यथा ॥३॥

मैं असम्बद्ध विषय पर बातचीत करना नहीं चाहता, परन्तु सारी प्रकृति अनुपम है। सच्चाई सब एक ही नमूने की है। उत्क्रम के लिये क्षमा चाहता हूँ। विज्ञानियों का विश्वास है और निस्सन्देह यह विश्वास सुनिश्चित कारणों पर है कि प्रकाश और ताप दोनों एक दूसरे के सनातन सहकारी हैं। इनमें से प्रत्येक के भीतर दूसरे को आविर्भूत करने की शक्ति, सार और तत्त्व विद्यमान हैं। दोनो ही गति हैं। दोनों ही थरथराहटें हैं पर उनके कम्पन के वेग भिन्न-भिन्न हैं। कम्पन एक ही माध्यम में होते हैं। प्रकाश में प्रतिफलित होने की क्षमता है। यही बात ताप की है। प्रकाश में ध्रुविभवन का सामर्थ्य है। यही सामर्थ्य ताप में भी है। ताप पशु शरीर में जीवन को बनाए रखता है। प्रकाश वनस्पतियों के जीवन का आधार है। ताप भाप का वायुमण्डल पैदा करता है। प्रकाश भाप के बने बादलों को वर्षा के रूप में मैदानों पर गिराता है। ताप और प्रकाश प्रकृति में व्याहे हुए साथी हैं। ताप गरम हैं और प्रकाश ठण्डा और तरोताजगी देनेवाला है। ताप और प्रकाश शरीर का प्रणय और जीवन है। वे प्रकृति में एक दूसरे के साथी और (Complements) हैं। रंगों का समुज्ज्वल खेल जो प्रकाश हमें दिखाता है। वह ताप द्वारा उत्पन्न होने वाले वैसे ही महत्वपूर्ण आणविक और रसायनिक परिवर्तनों से कुछ कम अद्‌भुत नहीं। किसी वस्तु को गरम करके तुम उसे तापोज्ज्वल दशा में ला सकते हो यहाँ तक कि वह जलने लगती है। समीचीन उपायों से तुम प्रकाश को पकड़ कर उससे अपनी चीजें गरम करा करते हो, बल्कि, यदि जरूरत हो तो उन्हें जलवा भी सकते हो। पर देखो वे अपने साझे स्त्रोत, सूर्य से कैसे निकलते हैं। वे जोड़ा-जोड़ा चलते हैं। सूर्य की गर्मी देनेवाली किरणों को वेद मंत्र में भ्राजन्तो अग्नयः कहा गया है। प्रकाश निकालने वाली, रंग देने वाली चित्र विचित्र किरणों के लिये वेद मंत्र में 'रश्मयो केतवः' शब्द आया है। कैसी सुन्दरता से वे एक दूसरे के साथ मिली हुई, एक दूसरी का आलिंगन करती हुई, ये गरमी पहुँचाने वाली तथा वर्ण सम्बन्धी किरणें सूर्य से दौड़ती हैं और समुज्ज्वल अन्तरिक्ष में से करोड़ों मीलों की यात्रा के बाद पृथ्वी पर गिरकर जीवन को उष्ण और सोई हुई बुद्धि को उद्भाषित करती हैं। सगर्व विज्ञानी किरणों के इन आपस में मिले हुए आपस में गाढ़ आलिंगन किये हुए और एक दूसरे से सम्बन्ध वैवाहिक जोड़ों को भले ही आयोडीन की साफियो (फिल्टरों) और फिटकड़ी के घोलों (सोल्यूशनों) द्वारा छानकर अलग-अलग कर सकने को डींग मारें, पर उनके सम्बन्ध का पूर्ण वियोग उनका एक का दूसरे से सर्वथा पृथक् हो जाना कभी सम्भव नहीं। आओ हम इससे शिक्षा लें। वेद मंत्र वाली किरणों से श्रजनां अनु) वैवाहिक सम्बन्ध की शिक्षा ग्रहण करना मनुष्यों का कर्तव्य ठहराता है। यह विवाह की गाँठ को अटूट और अखण्ड बनाये रखें और निरंकुश विवाहों के विपरीत मार्ग का अवलम्बन करके अपने सुख और शान्ति को निष्फल न करें। इस बन्धन को अटूट बनाये रखने से ही विधाता का संक्लप पूरा हो सकता है। सामयिक नियम के ?अनुसार किया हुआ एक अलंघ्य विवाह ही ईश्वरीय सत्ता के सत्य ज्ञान की प्राप्ति के समोचित है। अलंघ्यता के इसी पवित्र नियम का वेद मंत्र आदेश करता है। पर मंत्र का एक और अधिक गहरा अर्थ भी है जिसे कि हमें दृष्टि से ओझल न होने देना चाहिये। वह यह है कि ताप और प्रकाश सृष्टि के प्रत्येक भौतिक पदार्थ में प्रवेश (जनां प्रविष्टः) कर जाते हैं। जन जन्य पदार्थों का समुदाय है। हमें इस प्रतिज्ञा पर हँसना नहीं चाहिए। विज्ञान की दृढ़ फसील इसका समर्थन करती है। ताप पिण्ड के अणुओं की गति है। कोई भी वस्तु ऐसी नहीं जो आणविक कम्पन से सर्वथा शून्य हो। कम्पन एक व्यापक नियम है। प्रकाश आकाश (ईश्वर) की घटना है। आकाश वह स्वप्रकाश माध्यम है जिसके कम्पन से तत्त्वतः प्रकाश उत्पन्न होता है। सारे जन्य पदार्थों में क्या कोई पदार्थ है, जिसमें गति और आकाश दोनों एक ही समय से इकट्ठे नहीं रहते ? ठीक उसी प्रकार ही ईश्वरीय सार भी प्रत्येक सजीवन आत्मा के भीतर निवास करता है।

'वैदिक धर्म की वेदी पर प्रथम बलिदान : महर्षि दयानन्द'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आज महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का बलिदान दिवस है। आज ही के दिन 30 अक्तूबर, सन् 1883 को अजमेर में सूर्यास्त के समय महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन की अन्तिम सांस ली थी। उनके बलिदान का कारण उनका वैदिक धर्म का प्रचार करना था। स्वार्थी, पाखण्डी व अज्ञानी लोगों को उनका प्रचार रास नही आ रहा था। उनके विरोधियों के पास वैदिक धर्म के सच्चे सिद्धान्तों का कोई उत्तर नहीं था। कोई ऐसा मत नहीं था जिसकी न्यूनताओं का उन्होंने प्रकाश न किया हो। इतना ही नहीं, उन्होंने सभी मतों के अनुयायियों की वैदिक धर्म संबंधी सभी बातों, प्रश्नों, शंकाओं व शिकायतों का युक्ति, तर्क व प्रमाणों से समाधान किया था और सबको निरुत्तर किया था। उनकी सत्यता, ज्ञान की पराकाष्ठा, वेदों के प्रति प्रेम व स्पष्टवादित ही उनके बलिदान का कारण बनी थी। देश ही नहीं, संसार को अज्ञान व अन्धविश्वास से मुक्त कराने के लिए उन्होंने अपना जीवन दांव पर लगाया था और अपने प्राणों का किंचित मोह नहीं किया था। उनके वेद प्रचार के कारण संसार से अन्धविश्वासों व पाखण्डों में बहुत कमी आई है। यदि वह कुछ वर्ष और जीवित रहते तो न केवल हमारा देश धर्म, शिक्षा, विज्ञान, अध्यात्म, सामाजिक समरसता में अधिक उन्नति करता अपितु देश से अज्ञान व अन्धविश्वास भी कहीं अधिक मात्रा में दूर व समाप्त होते।

महर्षि दयानन्द ने किसी एक क्षेत्र में ही कार्य नहीं किया अपितु उन्होंने समग्र क्रान्ति की थी। धार्मिक अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीतियां, पाखण्ड आदि तो उन्होंने दूर किये ही, इसके साथ उन्होंने ज्ञान का अजस्र स्रोत ईश्वरीय ज्ञान वेद का भी पुनरुद्धार किया। यह वेद ज्ञान मनुष्य का सर्वस्व व सर्वाधिक मूल्यवान एवं उपयोगी वस्तु है जिससे इस जीवन की उन्नति के साथ मष्त्यु के पश्चात मोक्ष की उपलब्धि भी हो सकती वा होती है। संसार उनके समय में ईश्वर के सत्य स्वरूप से अनभिज्ञ था। जीवात्मा और प्रकषति का स्वरूप भी प्रायः लोगों को ज्ञात नहीं था। हमारे अपने पण्डे–पुजारी वेद ज्ञान से शून्य थे और धर्म सम्बन्धी मनमानी करते थे। दलितों पर घोर अन्याय किया जाता था। मातष शक्ति व दलित भाई बहिनों सहित क्षत्रिय व वैश्यों को भी वेदाध्ययन से वंचित कर दिया गया था। कर्मणा ब्राह्मणों का देश व समाज में सर्वत्र अभाव था और जन्मना ब्राह्मण वेदाध्ययन करते नहीं थे। किसी को न वेद कण्ठस्थ थे और न ही वेद के मन्त्रों के सत्य अर्थो का ही ज्ञान था। चेतन ईश्वर को भुलाकर उसका स्थान पाषाण की मनुष्य निर्मित मूर्तियों ने ले लिया था। इसका जो परिणाम होना था वह सत्य इतिहास पढ़ने पर विदित होता है। उनके समय में शारीरिक, बौद्धिक, चारित्रिक, मानसिक, अध्यात्मिक व सामाजिक पतन की पराकाष्ठा थी। यहां तक हुआ कि एक माता का पुत्र मर गया। उस माता के पास कफन तक के लिए भी धन व वस्त्र नहीं था, विधि विधान के अनुसार अन्त्येष्टि तो बहुत दूर की बात थी। अपनी आधी धोती फाड़कर उसमें उस माता ने अपने पुत्र के शव को लपेट कर गंगा नदी में बहा दिया और ऐसा करके अपनी धोती का वह भाग वापित हटा लिया जिससे उसे सीकर वह अपने शरीर को ढक सके। देश में आये इस दुर्दिन का कारण वेदों के ईश्वरीय ज्ञान का हमारे ब्राह्मणों द्वारा अनादर करना था। यदि वह वेदाध्ययन से जुड़े रहते, जैसे महाभारत काल तक जुड़े रहे थे तो यह दुर्दिन कदापि न आता। केवल मूर्तिपूजा का अज्ञान व अन्धविश्वास ही नहीं था अपितु जन्मना जातिवाद ने भी मनुष्यों को निर्बल व असंगठित किया जिसका लाभ विदेशियों और विधर्मियों ने हमारा शोषण, अपमान व धर्मान्तरण कर किया। इसके साथ ही मष्तक श्राद्ध व फलित ज्योतिष जैसी कुरीतियों से भी देश को भारी हानि हुई है। अज्ञान व अन्धविश्वास से सदा सर्वदा हानि ही होती है, लाभ किसी को कभी नहीं होता। महर्षि दयानन्द ने इन सभी अन्धविश्वासों के विरुद्ध आवाज उठाई और इनसे देश को मुक्त कराने का प्रयास किया जिसका परिणाम 30 अक्तूबर, 1883 ई. को एक षडयन्तत्र के अर्न्तगत विष देकर उनकी मष्त्यु का होना था। महर्षि दयानन्द ने हमें अन्धविश्वास व अज्ञान के निवारण तथा समाज व देश को सशक्त करने के लिए हमें हथियार के रूप में सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, वेदों का भाष्य, संस्कार विधि, गोकरूणाविधि, व्यवहारभानु, पाणिनी–महाभाष्य–निरुक्त की वेदार्थ पद्धति, मनुस्मषति के सच्चे स्वरूप का परिचय और इतिहास विषयक बहुमूल्य जानकारियें से मालामाल किया। उन्होंने गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को भी पुनर्जीवित किया जिसके अनुसार आर्यसमाज ने सैकड़ों गुरुकुल व दयानन्द ऐंग्लोवैदिक स्कूल खोले जो आज भी देश को वेदों व वैदिक साहित्य सहित आधुनिक शिक्षा देकर नाना विषयों के विद्वान प्रदान कर रहे हैं। स्वामी रामदेव जी ने योग और स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण व प्रचार के क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान दिया है। आगे भी उनसे ऐसी ही उम्मीदें हैं। इससे पूर्व भी महर्षि दयानन्द के अनेक शिष्यों ने शिक्षा, पत्रकारिता, इतिहास, वैदिक साहित्य के अनुसंधान व उनके हिन्दी में भाष्य आदि के क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान किया। शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, क्रान्ति के अग्रदूत पं. श्यामजी कष्ण वर्म्मा, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज जी व शहीद भगत सिंह जी का पूरा परिवार उन्हीं की देन थे। उनका देश की उन्नति में सर्वाधिक व अविस्मरणीय योगदान है। उनका सबसे बड़ा योगदान ईश्वर, जीवात्मा व प्रकषति के सत्य स्वरूप से परिचय कराकर ईश्वर की सरलतम स्तुति–प्रार्थना–उपासना की सत्य पद्धति को प्रदान करना था जिसमें संसार के मुनष्यों की उन्नति अर्थात् अभ्युदय व मोक्ष की प्राप्ति निहित है। इसके समान अन्य कोई उपासना पद्धति ऐसी नहीं है जिससे ईश्वर का साक्षात्कार किया जा सके। एक साधारण व अपढ़ व्यक्ति भी यदि इस पद्धति के अनुसार तप व पुरुषार्थ करे तो ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करने के साथ ईश्वर का साक्षात्कार कर जीवन को शिखर पर ले जा सकता है। उनके सभी योगदानों के लिए हम उनको अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। हम आशा करते हैं कि आने वाले समय में संसार पक्षपात रहित होकर उनके सत्य सिद्धान्तों का अध्ययन कर उसे अपनायेगा जिस प्रकार कि उसने विज्ञान को अपनाया है।

మూడు కథలు - ఒక నీతి

-ఎం.వి.ఆర్. శాస్త్రి

హైందవం మతం కాదు ధర్మం - అది ఒక జీవన విధానం

నిజం

ఆ ధర్మాన్ని అన్ని మతాల వారూ అంగీకరించినప్పుడు సమస్య లేదు. ఆదిమూలమైన సనాతన ధర్మానికి అందరూ కట్టుబడ్డంత కాలం శైవం, వైష్ణవం వంటి స్వదేశీయ మతాలు, వాటి మధ్య విభేదాలు, విరోధాలు ఎన్ని ఉన్నా జనజీవనం క్షేమంగానే ఉండింది

యుగయుగాలుగా మానవాళికి వెలుగు చూపిన సనాతన ధర్మాన్ని ససేమిరా గుర్తించక, పీసమెత్తు విలువ ఇవ్వక, దాన్ని కూకటివేళ్లతో పెకలించి, తాము ఏకైక సత్యమని నమ్మే తమ మతాన్ని దాని స్థానంలో ప్రతిష్ఠించాలని తహతహలాడే విదేశీయ మతాలు వచ్చి పడ్డాక పరిస్థితి మారింది. అన్ని మతాలకు శిరోధార్యం అని అప్పటిదాకా అనుకుంటున్న ధర్మాన్ని, అన్యమతాల దాడుల బారి నుంచి కాపాడుకోవటం ఎలా అని ఆలోచించాల్సిన అగత్యం వచ్చింది. ఈ ధర్మం మీద విశ్వాసం ఉన్న సకల మతాలు, సమస్త వర్గాలు ఏకమై, ముంచుకొస్తున్న ముప్పును ఎదుర్కోవడానికి విశాలదృష్టితో సర్వసన్నద్ధం కావలసిన సమయం ఆసన్నమైంది. ఉన్న బలాన్ని నిలుపుకోవటానికి, వైరిబలం పెరగకుండా చూడటానికి, ప్రాణాంతక సమస్యలు తలెత్తకుండా జాగ్రత్తపడటానికి కొంగొత్త ఉపాయాలను కనుక్కోవలసిన తరుణం వచ్చింది. దురదృష్టమేమిటంటే సరిగ్గా ఆ ప్రాప్తకాల జ్ఞతే హిందూ సమాజానికి ఆది నుంచీ కొరవడింది. దేశకాల పరిస్థితులనుబట్టి పద్ధతులను మార్చుకోకుండా తాబట్టిన కుందేటికి మూడే కాళ్లని మూర్ఖంగా మొరాయించినందుకు శతాబ్దాల చరిత్రలో అడుగడుగునా భయానక మూల్యమే చెల్లించవలసి వచ్చింది.

ఉదాహరణకు కాశ్మీర్ కథనే చూడండి. కాశ్మీరాన్ని ఏలిన చిట్టచివరి హిందూ రాజు సింహదేవుడు. అతగాడి ఏలుబడిలో ఇద్దరు పరదేశులు వచ్చి ఆశ్రయం కోరారు. దుంప నాశనాన్ని కోరి కొని తెచ్చుకుంటున్న సంగతి ఎరుగక వెర్రి రాజు సరే అన్నాడు. ఇద్దరికీ చెరో జాగీరు పంచాడు. తన కొలువులో మంచి స్థానం ఇచ్చాడు.

వారిలో ఒకడు బౌద్ధుడు. పేరు

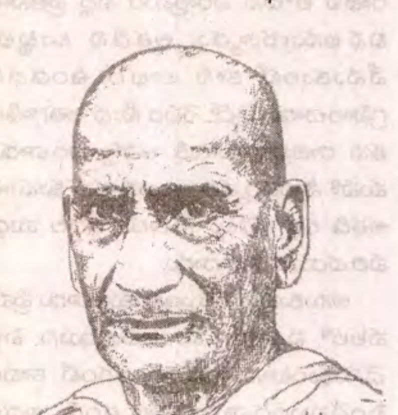

రించన. లద్దాఖ్ నుంచి వచ్చాడు. అక్కడి ప్రభువు ఇతడికి స్వయానా పినతండ్రి. వారసత్వ వివాదంలో ఇద్దరికీ చెడింది. ప్రాణం దక్కించుకోవటానికి రించన కాశ్మీర్‌కి పారిపోయి వచ్చాడు. రెండో పరదేశి పేరు షామిర్. టర్కీలో ముస్లిం సర్దారు. ఇద్దరికీ నుంచి జత కలిసింది.

1322 సంవత్సరంలో చెంగిజ్‌ఖాన్ వారసుడు డల్‌చూఖాన్ 70 వేల అశ్విక దళంతో కాశ్మీర్ మీద దాడి చేశాడు. అడ్డగోలుగా దోచుకుని, వేల మందిని ఊచకోత కోసి, యాభైవేల బ్రాహ్మణులను బానిసలుగా పట్టుకుపోయాడు. దేవసార్ కనుమదాటుతుండగా ముంచుచరియ కూలి బానిసలు, సైనికులు మొత్తం అందరూ చచ్చిపోయారు.

డల్‌చూ దెబ్బను తట్టుకోలేక మహారాజు సింహదేవుడు రాజ్యం వదిలి పారిపోయాడు. రాజ్యం అరాజకం కాకుండా అతడి సేనాపతి రామచంద్ర తనను తాను ప్రభువుగా ప్రకటించుకున్నాడు. పరిస్థితి చక్కదిద్దేందుకు అతడు తంటాలు పడుతుండగా అతడి వెన్నంటి ఉన్నట్టే ఉండి, అక్షరాలా వెన్నుపోటు పొడిచి రాజ్యం గుంజుకున్నాడు రించన. ప్రజల్లో తీవ్ర వ్యతిరేకత రాకుండా, తాను చంపిన రామచంద్రుడి కుమార్తె కోటరాణిని పెళ్లి చేసుకున్నాడు. వేరే దారి కానక ఆమె పరిస్థితికి తలవంచింది. అయితే హిందూ మతం స్వీకరించాలని అతడికి షరతు పెట్టింది. తన ఆధిపత్యాన్ని జనం అంగీకరించాలంటే వారి మతాన్నే తానూ స్వీకరించటం ఉత్తమమనిరించిన కూడా తలిచాడు. అప్పట్లో కాశ్మీర్‌లో అత్యధిక సంఖ్యాకులు అనుసరించేది శైవమతాన్ని. తననూ అందులోకి తీసుకోమని శైవుల ప్రధాన గురువైన దేవస్వామిని కొత్త రాజు అడిగాడు. అసలే రోజులు బాగా లేవు. మంగోలు ముష్కరుడు వచ్చి నానా ఆగంచేసి, చెట్టుకొకరు పుట్టకొకరుగా జనాన్ని ప్రాణభయంతో పరుగులెత్తించి ఎంతో కాలంకాలేదు. అప్పటికే గజనీ మహమ్మదు పలుమార్లు దండెత్తివచ్చి, సోమనాథ్ దేవాలయాన్ని ధ్వంసం చేసి, హిందువులను లక్షల సంఖ్యలో ఊచకోత కోసి వెళ్లాడు. అతడి తరువాత విరుచుకుపడ్డ మహమ్మద్ ఘోరీ ఎన్నెన్ని ఘోరాలకు పాల్పడి, ఎన్ని లక్షల మందిని మెడ మీద కత్తిపెట్టి బలవంతంగా మతం మార్పించిందీ, ప్రసిద్ధ హిందూ దేవాలయాలు ఎన్నింటిని నేలకూల్చిందీ

కథలు కథలుగా ఆబాల గోపాలం చెప్పుకుంటూనే ఉన్నారు. మిగతా దేశమంతా ఇస్లామిక్ దండయాత్రలతో అతలాకుతలమై, ముస్లిం మతోన్మాదం బారినపడి హిందువులు భయానక క్షోభ పడుతున్న సమయమది. అదే దౌర్భాగ్యం కాశ్మీర రాజ్యానికీ పట్టకూడదనుకుంటే రాజ్యాన్నేలేవాడు హిందువై ఉండటం అన్నికంటే ముఖ్యం. వాడి గుణగణాలు, యోగ్యతలు ఏమిటన్నవి తరచి చూడటం దండుగ. అందునా గద్దె నెక్కిన రించనను ఇస్లాం మతంలోకి ఆకర్షించాలని అతని సావాసగాడు షామిర్ నానా ప్రయ త్నాలు చేస్తున్నాడు. అలాంటి పరిస్థితుల్లో తనకు తానుగా హిందూ మతం స్వీకరించ డానికి ముందుకొచ్చిన కొత్త రాజు కోరికను మన్నించడమే హిందూ ధర్మానికి శ్రేయస్కరం. అదే హిందువులకు క్షేమం.

కాని అంత దూరం ఆలోచించే వివేకం అప్పటి మత పెద్దలకు లేకపోయింది. నువ్వు బౌద్ధుడివి కాబట్టి శైవాచారంలో నీకు ప్రవేశం లేదు - అని దేవస్వామి కరాఖండిగా తిరస్కరించాడు. శైవం కాకపోతే మరే మతాన్ని స్వీకరించాలి? జనం మన్నన ఎలా పొందాలి - అని రించన మథనపడుతూంటే స్నేహితుడు షామిర్ ఒక ఉపాయం చెప్పాడు.

"ఒక పని చేద్దాం. నిర్ణయం విధికి వదిలేద్దాం. రేపు పొద్దున్న నువ్వు లేచాక మొదట ఎదుటపడే మనిషిది ఏ మతమైతే అ మతాన్ని నువ్వు స్వీకరిస్తే సరి" అన్నాడు. రాజు సరే అన్నాడు. షామిర్ ముందుగా ఏర్పాటు చేసి పెట్టిన ప్రకారం బుల్‌బుల్‌షా అనే ముస్లిం ఫకీరు మర్నాడు లేవగానే రాజు కంటపడ్డాడు. మోసాన్ని పోల్చుకోలేని రాజు అదే దైవనిర్ణయమనుకుని ఇస్లాం మతం పుచ్చుకున్నాడు. షా సుద్రుద్దీన్‌గా పేరు మార్చుకున్నాడు.

అలా మొదలైంది కాశ్మీర్‌లో ముస్లిం పాలన. తరవాత ఏమైందో వివరించక్కర్లేదు. ప్రఖ్యాత మార్తాండ దేవాలయం సహా ఎన్నెన్నో గుడులు నేలమట్టమయ్యాయి. కాశ్మీర్ మొత్తం ముస్లిం మయమైంది. హిందువులు కట్టుబట్టలతో లోయ విడిచి కాందిశీకుల్లా పరాయి పంచన తలదాచు కోవలసి వచ్చింది. మీ మతంలో కలవనివ్వండని కోరి వచ్చిన ప్రభువును చాదస్తాలతో తిరస్కరించి, వినాశనాన్ని చేతులారా కొన్ని తెచ్చుకున్న మత మౌఢ్యానికి ఫలితమిది.

ఇంచుమించుగా అలాంటి సందర్భమే రెండు శతాబ్దాల తరవాత కళింగ రాజ్యంలో వచ్చింది.

ఈసారి కథానాయకుడు పరదేశి కాదు. మనవాడే. జన్మత: హిందువే. అందునా ఆచారమెరిగిన బ్రహ్మణుడు. పేరు రాజీవ్ లోచన్ రాయ్. కళింగ - ఉత్కళ రాజ్యానికి చివరి చక్రవర్తి అయిన గజపతి ముకుంద దేవుడికి ముఖ్య సేనాని. వంగ దేశంలో మొగల్ గవర్నరుగా ఉన్న సుల్తాన్ సులేమాన్ కర్రాని గజపతి రాజ్యం మీదికి పలుమార్లు దండెత్తాడు. రాజీవ్ లోచన్ పరాక్రమం వల్ల ప్రతిసారీ విఫలమయ్యాడు. అతడిని బుట్టలో వేసుకుంటే కానీ లాభం ఉండదని గ్రహించాడు. ఏదో నెపం మీద అతగాడిని తన రాజప్రాసాదానికి ఆహ్వా నించాడు. మహా సౌందర్యవతి అయిన తన కుమార్తె అతడి కళ్ల పడేట్లు చేశాడు. ఇద్దరి మధ్య పరిచయం పెంచాడు.

అనుకున్నట్టే అయింది. కుర్రవాడు ప్రేమ వలలో పడ్డాడు. మీ అమ్మాయిని పెళ్లి చేసుకుంటానన్నాడు. అంతకంటే కావల సిందేముందన్నాడు పిల్ల తండ్రి. ఇద్దరి మతాలు వేరు కదా; నువ్వు మా మతంలోకి వస్తావా అని అడిగాడు. అలా ఎందుకు? మీ అమ్మాయినే మా మతంలోకి తీసుకుంటాం అని పట్టుబట్టాడు అబ్బాయి. అతడు తమకు అల్లుడవటమే అన్నింటికంటే ముఖ్యం కాబట్టి దానికీ సరే అన్నాడు కర్రాని. మా రాజుగారిని అడిగి చూస్తా అన్నాడు సేనాని. తన కుడిభుజం అనుకున్నవాడు తురకల్లో చేరితే తన పని ఖాళీ కనుక ఎలాగైనా దాన్ని అడ్డం కొట్టాలని గజపతిదేవుడు డిసైడ్ అయ్యాడు. పెళ్లి ప్రతిపాదన ఆలకించగానే, 'అదెలా కుదురుతుంది? తురక స్త్రీని స్వీకరించటానికి హిందూ ధర్మం ఒప్పుకోదు. అలాంటి మత మార్పిడి చెల్లదు' - అని తెగేసి చెప్పాడు.

రాజు మాటకన్నా జవరాలి వలపు సేనాపతి మీద ఎక్కువ పనిచేసింది. వేరే దారిలేక తానే మతం మారి 'కాలాపహాడ్' అని పేరు పెట్టుకున్నాడు. నికా అయ్యాక మెల్లిగా వలపు కైపు దిగి, మనసు మళ్లీ స్వధర్మం వైపు గుంజింది. పశ్చాత్తాపం కలిగింది. మళ్లీ హిందూ మతంలోకి కావాలనిపించింది. ప్రాయశ్చిత్తం చేసి నన్ను తిరిగి కులంలో కలుపుకోవలసింది; మీరు ఏమి చేయమంటే అది చేస్తాను... అని పూరీ వెళ్లి జగన్నాథాలయం అర్చకస్వాములను అడిగాడు.

నింపాదిగా ఆలోచిస్తే అది సనాతన ధర్మానికి శుభ పరిణామం. మొగలాయీ మహా సైన్యాన్ని ముప్పుతిప్పలు పెట్టి కొండలా ఢీకొన్నవాడు అదే ముష్కర మూకల శిబిరంలో చేరిపోయాక ఆధార్మిక శక్తులకు బలం ఎంత పెరుగుతుందో, అది ఎలాంటి దుష్పరిణా మాలకు దారితీస్తుందో ఊహిస్తేనే భయం వేస్తుంది. మతం మార్చుకుని 'కత్రీరకొండ'గా పేరు పడ్డవాడు మళ్లీ తమలోకి వచ్చి చేరి తమకు అండగా ఉంటానంటే హిందూ పక్షం సంతోషించి, అవశ్యం అందుకు వల్లె అనవలసింది.

కాని - షరా మామూలే. తురకల్లో కలిసి, సున్తీ చేయినిచుకుని, గోమాంసం కూడా తిన్న భ్రష్టుడివి; నిన్ను మళ్లీ ఆర్షధర్మంలోకి రానివ్వడం ససేమిరా కుదరదు. శాస్త్రం అందుకు అంగీకరించదు - అని నిష్ఠాగరి ష్ఠులైన శ్రోత్రియులు తేల్చి చెప్పారు.

రాజీవ లోచనుడి కళ్లు ఎర్రబడ్డాయి. అవమానభారంతో తల తిరిగింది. జన్మ సంస్కారం నశించింది. తామసం ప్రకోపిం చింది. విగ్రహారాధనలు, కాఫిర్ల చాదస్తాల గురించి తాను చేరిన కొత్త మతం చెప్పేదే నిజమనిపించింది. అతడిలో రాక్షసుడు నిద్ర లేచాడు. 'కాలాపహాడ్' ధాటికి గజపతి రాజ్యం కుప్పకూలింది. 1568లో అతడి భీకర దాడులకు ఒడిస్సా ధ్వంసమైంది. కోణార్క్, పూరీ, కటక్, సంబల్‌పూర్ వగైరా ప్రాంతాల్లోని జగద్విఖ్యాత దేవాలయాలు నేలమటమయ్యాయి.

తురకల్లో చేరి అచారభ్రష్టుడైన వాడిని మళ్లీ స్వధర్మంలోకి అనుమతించవచ్చా అన్నది వేదాల్లో, ధర్మశాస్త్రాల్లో ఎక్కడా రాసిపెట్టి ఉండకపోవచ్చు. కాని పూర్వ శాస్త్ర గ్రంథాల్లో అనుమతించలేదు కాబట్టి అరు నూరయినా దాన్ని

అనుమతించచనేకూడదని మొండిగా వాదులాడటం అవివేకం. ధర్మశాస్త్రాలను, ఆచారకాండను పై నుంచి కిందికి, కింది నుంచి పైకి గడగడ ఒప్పజెప్పగలిగినంత మాత్రాన ప్రయోజనం లేదు. ధర్మాధర్మాలు నిర్ణయించాల్సిన వారికి ధర్మశాస్త్రం క్షుణ్ణంగా తెలిస్తే సరిపోదు. ధర్మసూక్ష్మాలు తెలియాలి. ఆవద్ధర్మాలూ ఎరగాలి. అన్నింటికి మించి ప్రపంచ జ్ఞానం పుష్కలంగా ఉండాలి. పూరీ పండితులకు అవి లోపించటవేు కళింగ దేశానికి ప్రళయ కారణమైంది.

ఆ లక్షణాలు సమృద్ధిగా ఉన్నాయి కాబట్టే అదే రకమైన మీమానం ఎదురైనప్పుడు విద్యారణ్యస్వామి అద్భుత ధర్మ నిర్ణయం చేశాడు. ఆయన చూపిన చొరవ చరితార్థమైన విజయనగర మహాసామ్రాజ్యాన్ని నిర్మించింది. మహమ్మదీయ పెనుతుఫానును దక్షిణా పథంలో అది రెండు శతాబ్దిలకు పైగా నిలువరించింది.

అదీ పూరీ వారి నిర్వాకం తరవాత కాదు. దానికి రెండు శతాబ్దాల ముందు.

1309లో మాలిక్ కాఫర్ భారీ బలగాలతో దండెత్తి ఓరుగల్లును కూల్చాక, ద్వారసముద్రంలో హోయసాల రాజ్యం అంతరించి, దేవగిరి రాజునూ చర్మం ఒలిపించి, దక్షిణ భారతమూ చుక్కానిలేని పడవలా కాల వైపరీత్యంలో కొట్టుకు పోనున్నదని దాక్షిణాత్యులు తల్లడిల్లు తున్న తరుణంలో ఆపద్బాంధవుడిలా ఆదుకున్న వాడు విద్యారణ్య స్వామి.

మాధవ విద్యారణ్యస్వామి ఉద్దండ పండితుడు. వేద వేదాంగవేత్త. మహా తపస్వి. శృంగేరి పీఠాన్ని అధిష్ఠించిన మహాస్వామి. బహుగ్రంథకర్త. గొప్ప ధర్మవేత్త. ఆయన హిందూ మతోద్ధరణకు జీవితాన్ని అంకితం చేశాడు. హిందూ మహాసామ్రాజ్యాన్ని నర్మిస్తేగానీ తన ఆశయం సిద్ధించదని గ్రహించాడు. తన లక్ష్యసాధనకు ఉపకరించ గల వారికోసం ఆయన వెదుకుతుండగా దైవికంగా హక్క, బుక్కలు తారసపడ్డారు.

వారు అన్నదమ్ములు. ఓరుగల్లు పతనానంతరం ఆనెగొందికి వలసపోయి అక్కడి కొలువులో చేరారు. ఆనెగొంది రాజును హతమార్చిన తుగ్లక్ సేనలు బందీలుగా ఢిల్లీకి తీసుకుపోయి, బలవంతంగా మతం మార్పించిన వారిలో వీరు కూడా ఉన్నారు. తిరుగుబాట్లను అణచడానికి వేరే దారిలేక, నమ్మకస్తులుగా కనిపించిన ఈ అన్నదమ్ములను తన ప్రతినిధులుగా అనెగొందికి తుగ్లక్ తిరిగి పంపించాడు.

మామూలుగా అయితే తమను నమ్మి, సామంత హోదా ఇచ్చి ఒక మోస్తరు రాజ్యాధికారం కట్టబెట్టిన తుగ్లక్ ప్రభువుకు సోదరద్వయం కృతజ్ఞులై ఉండాలి. కొత్తగా పుచ్చుకున్న మతం ప్రకారం నడిచి, కాఫిర్లను హింసించి, బలవంతంగా మతం మార్పించి, ప్రభువుల వారికి అమందానందం కలిగించి ఉండాలి. కాని హక్క, బుక్కలు తమకు పట్టిన ధర్మ భ్రష్టత్వానికి కుమిలిపోతూ, ఏనాటికైనా స్వధర్మానికి తిరిగి రావాలని తహతహలాడారు. వారు కోరుకున్న అవకాశం విద్యారణ్యుల రూపంలో వచ్చింది.

తాను ఎప్పటినుంచో ఎదురు చూస్తున్న క్షాత్రశక్తి హక్క, బుక్కల్లో స్వామికి కనిపించింది. వాళ్లు తురకల్లో కలిశారు కదా, జంధ్యాలు తెంపేశారు కదా, సున్తీ కూడా అయి నమాజ్‌లు చేసినవారు కదా, అలాంటి వారిని వెనక్కి తీసుకోవడానికి సనాతన ధర్మం సమ్మతిస్తుందా అని ఆయన డీలా పడలేదు. అనంతర సతాబ్దాల్లో పూరీ పండితుల్లా సంకుచితత్వం చూపలేదు.

"వారిని ఇస్లాం మతంలో నుండి హిందూ మతంలోకి మరల చేర్చుకుంటే కాని అనుకున్నది సాధ్యం కాదు. శాస్త్రాల్లో అట్టి ప్రాయశ్చిత్తపూర్వక సంస్కారాలు ప్రత్యేకించి చెప్పబడలేదు. తమ గురువులు శృంగేరీ పీఠాధిపతులైన శ్రీవిద్యాతీర్థుల వారికి విద్యారణ్యులు తన ఆవేదన విన్నవించుకొని ఆ సోదరులకు హిందూమతంలో పునఃప్రవేశార్హతను కల్పించగోరుకొనెను. విశాల హృదయులైన శ్రీవిద్యాతీర్థుల నుండి ఆమోదము పొంది... ఒక సుముహూర్తమున హక్క బుక్కలను తుంగభద్రా నదిలో మంత్ర పూరితముగా స్నానములు చేయించి, విధ్యుక్తముగా ప్రాయశ్చిత్తము జరిపించిరి. హక్క బుక్కల హరిహరరాయ, బుక్కరా యలైరి."

(శ్రీ మాధవ విద్యారణ్యస్వామి చరిత్ర, గడియారం రామకృష్ణ శర్మ, పే. 59)

అది మనకు తెలిసిన మొదటి 'శుద్ధి'

.ఒక శత్రువు పెరుగుతున్నాడు

"హిందూ మతానికి దూరమైన వాళ్ల గురించి చెప్పండి స్వామీ! వారిని వెనక్కి తీసుకోవాలని మీ అభిప్రాయమా?" అని అడిగాడు స్వామి వివేకానందను 1899 ఏప్రిల్‌లో "ప్రబుద్ధ భారత" పత్రిక ప్రతినిధి.

"కచ్చితంగా! వారిని వెనక్కి తీసుకోవచ్చు. తీసుకుని తీరాలి కూడా" అని కాసేపు ఆలోచించి 'లేకపోతే మన సంఖ్య తగ్గిపోతుంది. మహమ్మదీయ చరిత్రకారులందరికీ పాతవాడైన ఫెరిస్టా చెప్పిన దాని ప్రకారం మహమ్మదీయులు వచ్చే నాటికి దేశంలో అరవైకోట్ల హిందువులుండేవారు. ఇప్పుడు మనం సుమారు ఇరవైకోట్ల మందిమి. హిందూ సమాజం నుంచి ఒకడు బయటికి వెళుతున్నాడంటే మనకు ఒకడు తగ్గడమే కాదు. ఒక శత్రువు పెరుగుతున్నాడు.

పైగా ఇస్లాంలో క్రైస్తవంలో వెళ్లినవారు కత్తి భయానికి చేరినవారు. వారి వంశీకులే ఇప్పటివాళ్లు. వారిని తక్కువగా చూడటం అన్యాయం" అన్నాడు స్వామి.

"మరి పుట్టుక నుంచీ విజాతీయులైన వారి సంగతో ?"

"ఒకప్పుడు వారూ హిందువులే. సామూహికంగా మతం మార్చబడ్డవాళ్లే. అదే ప్రక్రియ ఇంకా కొనసాగుతోంది"

ప్రాయశ్చిత్తాల గురించి వివేకానంద ఇల్లా అన్నాడు :

"ఇష్టపడి వేరే మతంలోకి వెళ్లినవారు స్వధర్మానికి తిరిగి వస్తామంటే ప్రాయశ్చిత్త కర్మకాండ చేయడం అవసరమే. కాని కాశ్మీర్, నేపాల్‌ల్లో రాజ్యం మొత్తం అన్య మతస్థుల కైవసం కావడం మూలంగా మనకు దూరమైన వారికి ప్రాయశ్చిత్తం విధించకూడదు. అలాగే జన్మతః విదేశీయులై ఇష్టపడి మనలో చేరగోరే వారికి కూడా ప్రాయశ్చిత్తంతో పనిలేదు".

"మతంలోకి తిరిగి వచ్చేవారు ఏ కులానికి చెందుతారు స్వామీ ! వారికంటూ కులం ఉండాలి. లేకపోతే హైందవ బృహత్ వ్యవస్థలో వారెప్పటికీ కలిసిపోలేరుకదా ?"

"మన నుంచి వెళ్లిపోవడానికి ముందు వారిది ఏ కులమో, ఆ కులాన్ని తిరిగి వచ్చాక వారు పొందుతారు. కొత్తగా చేరేవారికంటూ వేరే ఒక కులం ఉండాలి. వైష్ణవ మతంలో ఈ పని ఇప్పటికే

జరిగింది. వివిధ కులాల నుంచి, వేరే జాతుల నుంచి వైష్ణవంలో చేరినవారు ఆ పతాకం కింద కూడి, తామే ఒక కొత్త కులంగా ఏర్పడ్డారు. అది ఎంతో గౌరవపాత్రమైంది కూడా. రామానుజుల నుంచి వంగ దేశంలో చైతన్య వరకూ గొప్ప వైష్ణవాచార్యులందరూ అలాగే చేశారు"

"మరి పేర్ల నంగతేమిటి ? విజాతీయులకు, అన్య మతాలలోకి వెళ్లినవాళ్లకు హిందు మతంలోకి వచ్చాక కొత్త పేర్లు పెట్టాలి కదా ? కులనంబంధమైన పేర్లు వారు పెట్టుకోవచ్చా ?"

"తప్పకుండా. పేరులోనే చాలా ఉంది"

[*The Complete Works of Swami Vivekananda,* Vol.V.pp.233-234]

20వ శతాబ్దం ఇంకా అడుగుపెట్టక ముందు... జనాభా లెక్కలూ, హిందువుల సంఖ్యాక్షీణత తబిసీళ్లపై యు.ఎన్.ముఖర్జీ సుప్రసిద్ధ పుస్తకం రాయక పూర్వమే నవయుగ వైతాళికుడు వివేకానంద స్వామి ఆవిష్కరించిన దృక్పథమిది. చిత్రమేమిటంటే - 20వ శతాబ్దం వెళ్లిపోయి పుష్కరం దాటాక... హిందూ దేశంలో హిందువులు వరసగా అనేక రాష్ట్రాల్లో మైనారిటీలు అయిపోతున్న దారుణ దృశ్యం కళ్లకు కట్టి... హిందూ జాతి మనుగడే ప్రశ్నార్థకమవుతున్న ఈ రోజుల్లో కూడా నాటి వివేకానంద పలుకులు వింటే ఎందరో హిందువులు ఉలికిపడతారు.

మనకు తెలిసిన వేల సంవత్సరాల చరిత్రలో ఎందరు విదేశీయులు తనపైకి దండెత్తి వచ్చి, ఎన్నెన్ని మతాలను, విశ్వాసాలను తనపై రుద్దాలని ఎంతగా చెలరేగినా, కాలక్రమంలో ఆయా విజాతీయులను వారి తెగలను మత విశ్వాసాలను తన నిరంతర జీవన స్రవంతిలో భారతదేశం కలిపేనుకోగలిగింది. చాలామందికి తెలియని చారిత్రక వాస్తవం ఏమంటే - యవనులు, హూణుల వంటి తొలి తరాల ముష్కరులు మాత్రమే కాదు. మహమ్మదీయ తొలి దండయాత్రలను కూడా ఆర్యావర్తం తట్టుకుని నిలబడింది. తన మతం మార్చజూసిన ముసల్మాన్లనే నెమ్మదిగా తన మతంలో కలిపేసుకుంది. ఆశ్చర్యంగా ఉందా ?

క్రీ.శ. 712లో పర్షియా పాలకుడి పనుపున మహమ్మద్‌బిన్ కాశిం హిందూ రాజ్యమైన సింధ్‌పైకి దండెత్తాడు. రాజధాని దేవల్ నగరంలోని పురుషులందరినీ నిశ్శేషంగా నరికేశాడు. మహిళలను చెరబట్టి బానిసలుగా మార్చాడు. అలోర్, నిరుణ్, ముల్తాన్, కిరాజ్ నగరాల మీదా విరుచుకుపడి దేవాలయాలను బౌద్ధారామాలను నాశనం చేసి, ఎదిరించిన వారినల్లా ఊచకోత కోసి, స్త్రీ బాల వృద్ధులను వేల సంఖ్యలో బలవంతంగా ఇస్లాం మతంలోకి మార్పించాడు. గుడులను పడగొట్టి వాటి శిథిలాల మీద మసీదులను కట్టించి, ఎక్కడికక్కడ ముస్లిం గవర్నర్లను నియమించి ముప్పాటలా నమాజ్ ఘోషతో దిక్కులు మారుమోగుతుండగా మూడేళ్ల తరవాత స్వదేశానికి తిరిగి వెళ్లాడు. తరువాత ఏమైంది?

"Not only the Arab power in Sind declined rapidly, but also most of the neo converts returned to their former faith. The people of India had returned to idolatry excepting those of Kassa, and the Musalmans had no place of security in which they could take refuge"

[*History of India As told by its own Historians, Elliot & Dowson,* Vol. 1p.120]

సింధ్‌లో అరబ్ ప్రాభవం క్షీణించడమే గాక కొత్తగా మతం మారిన వారిలో అత్యధిక సంఖ్యాకులు తమ పూర్వ మతంలోకి తిరిగి వెళ్లారు. కస్సాలో మినహా భారతప్రజలు విగ్రహారాధనకు మరలిపోయారు. ముసల్మాన్లకు భద్రత కరవైంది... అని జుజ ఔరిజబిఖితిజీరి అనే ముస్లిం చరిత్రకారుడే స్వయంగా చూసి మరీ చెప్పాడు.

After the recall of Muhammad Bin Qasim, the Muslims retained some foothold on the west bank of the river Indus, but they were in such small number that they gradually merged into Hindu population. In Mansura (the Muslim capital of Sind) they actually adopted Hinduism.

[*Islam,* **Sir Dension Ross, p.18]**

మహ్మమ్మద్‌బిన్ కాశింను వెనక్కి పిలిపించాక, సింధునది పడమటి తీరాన ముస్లింలు కొన్ని కాలు నిలదొక్కుకో గలిగారు. కాని వారి సంఖ్య ఎంత చిన్నదంటే క్రమేణా వారు కూడా హిందూ జనాభాలో చేరిపోయారు. సింధ్‌లో ముస్లిం రాజధాని అయిన మన్సురాలో వారు హిందూ మతాన్నే స్వీకరించారు- అని **Islam** గ్రంథంలో సర్ డెనిసియన్ రాస్ వెల్లడించాడు.

మహమ్మద్ బిన్ కాశిం దండయాత్ర తరవాత పన్నెండళ్లకు హాషీం ఖలీఫా అయ్యేనాటికి సింధ్‌లో మతం మారిన వారు దాదాపుగా అందరూ హిందూ మతంలోకి తిరిగి వెళ్లారు. క్రీ.శ. 1000 నాటికి సింధ్‌లో ముస్లింలుగా మిగిలి ఉన్నవారు చాలా తక్కువ - అని ఆ కాలపు ముస్లిం చరిత్రకారులు రాసి పెట్టారు.

సింధు దేశం నిన్న మొన్నటిదాకా ఆర్యావర్తంలో భాగం. 'హింద్' పదమే సింద్ నుంచి వచ్చిందని అంటారు. ఒకప్పుడు సనాతన హైందవ ధర్మానికి ఆలవాలమైన పుణ్యభూమి అది. అలాంటి చోట ఎన్నో వేల మందిని మెడ మీద కత్తిపెట్టి, బలవంతంగా మహ్మదీయ మతంలోకి మార్పించినా, క్రమేణా వారందరూ హైందవ ధర్మంలోకి తిరిగి రాగలిగారంటే - ఏమి అర్థమవుతుంది? దైర్జన్యంగా మతమార్పిడి జరిగిన వారిని తిరిగి స్వధర్మంలోకి తీనుకోగలిగిన ఔదార్యం, విశాల దృక్పథం పదమూడు వందల ఏళ్ల కిందట హిందూ సమాజానికి ఉన్నాయనే కదా ?

అదే ఔదార్యాన్ని అదే విధమైన విశాల దృక్పథాన్ని తరవాతి చేటు కాలంలో కూడా హిందువులు కనపరచి ఉంటే చరిత్ర గతి మరోలా ఉండేది. సింధ్‌పై కాశిం దండయాత్ర తరవాత దాదాపు మూడు శతాబ్దాలు మత వాతావరణం కొన్ని ప్రశాంతంగా ఉంది. క్రీ.శ. 1000 నుంచి గజనీ మహమ్మదు వరస దండయాత్రలతో మొదలు పెట్టి, ఘోరీ, ఖిల్జీల నుంచి తుగ్లక్‌లూ, మొగలాయీల వరకూ ఏడు శతాబ్దాల పాటు ఎన్నెన్ని ఘోరాలు జరిగాయో...

జంధ్యాల తెంపి, సున్తీలు చేసి, గోమాంసం నోట కుక్కి ఎన్ని లక్షల మందిని నిర్బంధంగా తురకలను చేశారో... తాము ఓడించిన రాజుల అంతః పురాల్లో, జనావాసాల్లో కంటపడిన ఆడవాళ్లనల్లా బానిసలను చేసి, బజారులో నిలబెట్టి కారు చవకగా విక్రయించి, బలవంతంగా మతం మార్పించి, వారి చేత విరివిగా పిల్లల్ని కనిపించి, తమ

......శేషము 18వ పేజీలో

కుటుంబం సుఖంగా ఉండాలంటే

-చలవాది సోమయ్య

పెద్దన్న సోదరులకు తండ్రిలాంటివాడు :-

తండ్రి చనిపోతే పెద్దన్న సోదరులకు తండ్రిలాంటివాడు :

జ్యేష్ఠభ్రాతా పితృసమోమృతే భర్తరి భారత,
కనిష్ఠాస్తం నమస్యేరన్ సర్వే ఛందాను వర్తినః
తమేవ చోప జీవేరన్ యథైవ పితరం తథా ॥ - భారతం. అను 105

భీష్ముడు యుధిష్ఠిరునితో అంటున్నాడు. ధర్మరాజా ! తండ్రి దివంగతుడైతే - చనిపోతే జ్యేష్ఠ సోదరుణ్ణే (పెద్దన్ననే) తండ్రిగా భావించాలి. తతిమ్మా సోదరులందరికి జీవనోపాధిని కల్పించి పోషించడం పెద్దన్న గారి విధ్యుక్త ధర్మం. చిన్న సోదరులంతా పెద్దన్నను తండ్రివలె గౌరవించి, ఆదరించి విధేయులై వారి ఆశ్రయంలోనే జీవించాలి.

స్త్రీ పతివ్రతగా పురుషుడు పత్నీ వ్రతుడుగా ఉండాలి :-

స్త్రీ పతివ్రతగా, పురుషుడు పత్నీవ్రతుడుగా ఉంటే ఆగృహం ఆనంద దాయక మౌతుంది.

ప్రపంచంలో ప్రతిప్రాణి సుఖశాంతులకోసం ప్రయత్నిస్తుంది. కాని పరమాత్మ సాక్షాత్కారం లేకుండ మానవుడు సుఖపడజాలడు. అయితే పరబ్రహ్మప్రాప్తికి మార్గ మేమిటి ? మహాయోగి యాజ్ఞవల్క్యుడు ఇలా మార్గం చూపిస్తున్నాడు.

ఇజ్యాచార దమాహింసా దాన స్వాధ్యాయ కర్మణామ్ ।
అయం తు పరమోధర్మోయద్యేగే నాత్మ దర్శనమ్ ॥
- యాజ్ఞవల్క్యస్మృతి

భగవత్సాక్షాత్కారానికి - యజ్ఞం, సదాచారం, దమం (మనస్సును వశపరచుకొనడం), దానం, స్వాధ్యాయం మొదలైన అనేక ఉపాయాలున్నా, యోగాభ్యాసం సర్వశ్రేష్ఠమైంది.

స్త్రీల పరమపద ప్రాప్తికి ఒకే ఒక సాధనం పతివ్రత యోగమే. యోగానికి పతివ్రత యోగానికి ఏమీ తేడాలేదు. యోగమంటే ఏమిటి' **"యోగశ్చిత్తవృత్తి నిరోధః ॥** -యో.ద.1-2.

చిత్తంలో బయలుదేరే చంచల వృత్తుల్ని విషయాల నుండి తప్పించి, పరమేశ్వరుని యందు స్థిరపరచడమే యోగమౌతుంది. అలాగే బహిర్ముఖములయిన ఇంద్రియాలను, చిత్త వృత్తులతో బాటు కుమార్గాల నుండి తొలగించి, తన పతిదేవునియందు స్థిరపచడమే స్త్రీలకున్న పతివ్రతయోగ మౌతుంది.

యోగికి ఏశక్తి లభిస్తుందో పతివ్రతకు ఆశక్తి లభిస్తుంది :-

అష్టాంగయోగం సిద్ధించిన పురుషునికి ఏశక్తి ప్రాప్తిస్తుందో అదేశక్తి పతివ్రత స్త్రీలకు కూడ సిద్ధిస్తుంది. దీనికి సంబంధించిన అనేక సన్నివేశాలు మనకు చరిత్రపుటల్లో కనబడతాయి. ఇచట రెండు ఉదాహరణలు చూద్దాం.

మహాభారత యుద్ధంలో భీష్ముడు పతనమయినాడు. ద్రోణుడు, కర్ణుడు, దుర్యోధనుని సోదరులంతా హతులైనారు. అపుడు దుర్యోధనుడు జీవితాశను వదలి తనతల్లి దర్శనానికై వెళతాడు. 'అమ్మా, మృత్యువు నుండి తప్పించుకొనే మార్గ మేమిటి?' అని తల్లిని ప్రశ్నిస్తాడు. ధర్మరాజు నీకు మృత్యువు నుండి తప్పించుకొనే మార్గం చెప్పగలడు కనుక ఆయన వద్దకు వెళ్లమన్నది. దుర్యోధనుడు అలాగే వెళ్లాడు 'సోదరా! సర్వాంగాలు నగ్నంగా చేసికొని నీ తల్లి దగ్గరకుపో, ఒకసారి ఆమె దృష్టినీ సర్వాంగాల మీద పడినట్లయితే నీ శరీరమంతా వజ్రం వలె దృఢంగా మారుతుంది. అప్పుడు నిన్నెవ్వరూ చంపలేరు' అని ధర్మరాజు సలహా యిచ్చాడు.

ధర్మరాజిచ్చిన ఉపదేశానుసారం దుర్యోధనుడు నగ్నంగా మాతృదర్శనార్థం పోవడానికి సిద్ధమయ్యాడు. పాండవులకు పరమహితైషి అయిన శ్రీకృష్ణునికి ఈ విషయం తెలిసి, తన పరిశ్రమ అంతా వృధా అవుతునిదని తలచి దుర్యోధనుణ్ణి సమీపించి, తల్లిని నగ్నంగా చూడడం సభ్యతకాదని చెప్పి, కనీసం లంగోటా అయినా కట్టుకొని పొమ్మని పంపించాడు. గాంధారి దుర్యోధనుణ్ణి ఇలా ప్రశ్నించింది. 'నాయనా, ధర్మరాజు ఎలా పొమ్మన్నాడో సరిగా అదేవిధంగా వచ్చావా? అన్నది. అవునమ్మా, ఆయన చెప్పినట్లుగానే వచ్చా' నన్నాడు. తన కండ్లకు కట్టుకున్న గంతను విప్పిచూచి, తన పతి వ్రతయోగం వలన జరిగిన విషయమంతా తెలిసికొని ఇట్లన్నది. మార్గేత్వయా సమ్మిళితో-ధునా కిం కృష్ణః కిమూచే వచనం వదస్వ ।

యోగేన శక్తిః ప్రభవేన్నరాణామ్ పాతివ్రతేవాపి కుల్గానా నామ్ ॥

బిడ్డా! మార్గమధ్యంలో నీకేమైనా శ్రీకృష్ణుడు కలిశాడా ? నీకు ఏమి చెప్పాడు? అన్నది. 'అమ్మా కండ్లకు గంతలు కట్టుకున్న నీకు ఈ విషయం ఎలా తెలిసింది. ఈశక్తి ఎలా వచ్చింది ? అని దుర్యోధనుడు ప్రశ్నించాడు. తల్లి జవాబు! యోగాభ్యాసం ద్వారా పురుషులకు ఏ శక్తి లభిస్తుందో, పతివ్రత యోగం వలన కులాంగనలకు - కులస్త్రీలను ఆశక్తి లభిస్తుంది' అన్నది.

మహాభారతంలో ఇంకొక కథ చూడండి.

కౌశికుడనే బ్రాహ్మణుడు వేదాధ్యాయి, తపస్వి మరియు ధర్మాత్ముడుగా ప్రసిద్ధి చెందాడు. ఒకరోజు ఆయన ఒక వృక్షం కూర్చొని వేదాధ్యయనం చేస్తుంగా పైనుండి కొంగ, రెట్ట ఆయన మీద వేసింది. తపస్వికి కోపం వచ్చి క్రోధపూరిత నేత్రాలతో దానివైపు చూడగానే, అది ప్రాణం విడిచి క్రింద పడింది. ఆపక్షి శవాన్ని చూచి పండితుని హృదయం ద్రవినిచి అతనికి చాలా పశ్చాత్తాపం కలిగింది. తప్త హృదయంతో గ్రామానికి భిక్షకైవెళ్లాడు. ఒక ఇంటికి వెళ్లి, 'మాతా! భిక్షాందేహి' అని అడిగాడు. లోపల నుండి గృహిణి 'మహాత్మా! ఆగండి ఇప్పుడే వస్తాను' అని జవాబిచ్చింది. కాని ఆమె ఆ సమయంలో వంట పాత్రలు శుభ్రపరస్తూ ఉంది. ఆపని పూర్తి కాగానే ఆమె భర్త ఆకలితో గృహానికి రాగాపతికి భోజనం వడ్డించినిది. పతిదేవుడు భోజనం చేస్తుండగా బ్రిహ్మణుడు గుర్తొచ్చాడు. అయ్యో ఆలస్యమయినది అని బాధతో లేచి భిక్షాన్నం తీసికొని ప్రాంగణం లోనికి వచ్చింది. ఆమెను చూడగానే బ్రాహ్మణుడు మండిపడి ఇట్లన్నాడు. 'నీ వ్యవహారం ఏమీ బాగాలేదు. ఇంత ఆలస్యమనుకుంటే ఆగుమని నన్నెందుకుంచావు? పతివ్రత అయిన ఆ స్త్రీ ఇలా జవాబిచ్చింది. ఓ

ద్విజవరా! క్షమించండి. నాకు అందరికంటె నాభర్తయే దేవుడు ఆయన అలసి, సొలసి ఆకలితో ఇంటికి వచ్చాడు. ఆయన సేవలో నిమగ్నమైనాను. పతిదేవుని వదలి నేను ఎలా రాగలను ? బ్రాహ్మణుడు కోపంతో ఇట్లన్నాడు. 'నీకు పతియే అందరి కంటే గొప్పవాడా? బ్రాహ్మణులు గొప్పవారుకారా? బ్రాహ్మణుల శక్తి నీకు తెలియదా? అగ్ని కీల తేజస్సంపన్నులు. వారనుకుంటే ఈసమస్త పృథివిని భస్మం చేయగలరు. ఈ జవాబును విని పతివ్రత ఇట్లన్నది' ఓ తపోధనీ! కోపడవద్దు, నీకోపదృష్టిపడగానే భస్మమై క్రిందపడి పోవడానికి నేనేమీ కొంగను కాను. నీవు ఈ విధంగా కోపాద్రిక్తుడవై నన్నేమీ చేయజాలవు. నేను బ్రాహ్మణులను (బ్రహ్మజ్ఞానులను) అవమానం చేయను గాని నాకు సమస్త దేవతల కంటె నాపతియే గొప్పదేవత

శుశ్రూషాయాః ఫలం పశ్య పత్యుః బ్రాహ్మణ యాదృశమ్ ।
బలా కాహి త్వయాదగ్ధా రోషాత్ తదితం మయా ॥ -భారతం అరణ్య

ఓ బ్రాహ్మణుడా ! పతిసేవ వలన కలిగెడి ఫలం నీవు ప్రత్యక్షంగా చూడు. నీవు కోపంతో చూడగానే కొంగ భస్మమై క్రిందపడిన విషయం నాకు పతివ్రత ధర్మం వలన తెలిసింది.

పురుషులకు అష్టాంగ యోగం ద్వారా ఎలాంటి ఫలితం లభిస్తుందో అలాంటి ఫలితమే స్త్రీలకు తమ పతివ్రత యోగం వలన లభిస్తుంది. అందువలననే ఆది ధర్మశాస్త్ర నిర్మాత మనుమహర్షి పతివ్రత ధర్మాన్ని ప్రశంసిస్తూ అన్న మాటలు చూడండి.

మనుస్మృతిలో పతివ్రత ప్రశంస :-

నాస్తిస్త్రీణాం పృథగ్యజ్ఞోనవ్రతం నాప్యు పోషణమ్ ।
పతిం శుశ్రూయతే యేన తేన స్వర్గే మహీయతే ॥

- మను. 5-155

స్త్రీలకు యజ్ఞాలు, వ్రతాలు, ఉపవాసాలు వేరుగా ఉండవలసిన పనిలేదు. కేవలం పతిసేవతోనే ఆమెకు మోక్షం లభిస్తుంది. మార్కండేయులు వారిలా అన్నారు.

నైవ యజ్ఞ క్రియాః కాశ్చిన్న శ్రాద్ధం నోపవాసకమ్ ।
యాతు భర్తరి శుశ్రూషా తయా స్వర్గం జయత్యుత ॥ -భారత. అరణ్య 205-22

స్త్రీకి ఏయజ్ఞ కర్మలు, శ్రాద్ధాలు, ఉపవాసాలు అవసరం లేదు. పతి సేవావ్రతం వలన ఆమె స్వర్గలోకాన్ని జయించగలదు.

శ్రీరామచంద్రునితో కూడి సీతాదేవి అరణ్యానికి వెళ్లేందుకు సిద్ధమైనపుడు ఆమెతో కౌసల్యాదేవి అన్నమాటలు.

స్త్రీణాం పవిత్రం పరమం పతిరేకో విశిష్యతే ॥

- వా.రా.అయోధ్య 29-24

స్త్రీలకు పతియే పరమ పవిత్రుడు, సర్వశ్రేష్ఠుడని తలంచుము. రామచంద్రుడు వనవాసానికి పోతున్నాడు. ఆయన రాజ్య విహీనుడైనాడని అవమానించ వలదు. పతి ధనవంతుడైనా, ధనహీనుడైనా అతడు దేవతవలె పూజ్యుడు, మాన్యుడు. కౌసల్యకు ప్రత్యుత్తరమిస్తూ సీతాదేవి అన్నమాటలు.

నా తన్త్రీ వాద్యతే వీణా నా చక్రో వర్తతే రథః ।
నా పతిః సుఖమేధేత యా స్యాదపి శతాత్మజా ॥
మితం దదాతి హి పితా మితం మాతా మితం సుతః
అమితస్య హిదాదారం భర్తారం కా న పూజయేత్ ॥

వా.రా.అయో.29-29,30

తంత్రులు (తీగెలు) లేకుండా వీణ నుండి ధ్వనులు రావు. చక్రాలు లేకుండా రథం నడవదు. అదేవిధంగా వందమంది పుత్రులున్నా భర్త లేకుండా స్త్రీకి సుఖం లేదు. తల్లి, తండ్రి, పుత్రులు యిచ్చే సుఖం పరిమితం. అమితమైన సుఖాన్నిచ్చే భర్తను ఏస్త్రీ పూజించదు.

ఆర్యసమాజ ప్రవర్తకుడు, యోగీశ్వరుడు మహర్షి దయానంద స్వాముల వారు ప్రసంగిస్తూ ఒక మారు తన భక్తులతో అన్నమాటలు.

"మన దేశంలో గొప్పగొప్ప వారి ఆచార విచారాలు ఎంతగానో చెడిపోయినాయి. ఈదేశం సర్వనాశనం అయిపోయి ఉండేది. వాళ్ల జీవన నౌకలు సముద్రంలో ఎప్పుడో మునిగి పోయి ఉండేవి. కాని వీళ్ల స్త్రీల యొక్క పతివ్రత ధర్మమే వీరిని ఇంతవరకూ రక్షించుతూ వచ్చింది. గుణవతులైన ఆర్యమహిళలే తమ పతివ్రత ధర్మం ద్వారా వీరిని రక్షించ గలిగారు.

ఎవరిని పతివ్రత అనాలి :-

సుస్వభావా సువచనా సువృత్తా సుఖదర్శనా ।
అనన్యచిత్తా సుముఖీ భర్తుః సాధర్మ చారిణీ ॥

- భారతం. అను. 146-35

ఎవరి స్వభావం, మాటతీరు ఆచరణ ఉత్తమంగా ఉంటుందో, ఎవరిని చూడగానే పతికి సంతోషం కలుగుతుందో, తన భర్తను తప్ప పరపురుషుని యందు మనస్సుంచదో, భర్త ఎదుట ఎల్లప్పుడు ప్రసన్న వదనంతో ఉండగలదో ఆ స్త్రీ పతివ్రత ధర్మాన్ని ఆచరించునట్టిదిగా భావించాలి.

ఏస్త్రీ తన ఇంద్రియాలను వశంలో ఉంచుకొని, అనన్య ప్రేమతో, భక్తితో పతి ఆజ్ఞల్ని పాలిస్తుందో ఏమహిళ మనోవాక్కాయాలతో భర్త సేవకు మించి దేనియందూ కోరికలు పెట్టుకోదో, పతినే ఏకైక సహచరునిగా భావిస్తుందో - ఆమెకు పతివ్రత, సాధ్వి, సతి అని పేరు. పని లేకుండా ఇంటినుండి ఆమె బయటికి పోదు. అత్త మామల్ని తల్లి దండ్రులుగా భావించి వారికి ఆదర సత్కారాల ద్వారా సేవ చేస్తుంది. ఆడబిడ్డను తన చెల్లెలుగా, మరదిని సోదరునివలె భావిస్తుంది. భర్త నిద్రించిన తరువాత తాను నిద్రిస్తుంది. భర్తకంటె ముందుగా లేచి గృహకార్యాలు ప్రారంభిస్తుంది. భర్తకు భోజనం వడ్డించి తరువాత తాను భోజనం చేస్తుంది. ఇంటి పనులు అయిపోయిన తరువాత, సద్గ్రంథాలను చదువుతుంది. భర్తకు సంబంధించిన ఆత్మీయుల్ని ఆదరిస్తుంది. సంతానాన్ని పాలన పోషణ చేస్తూ వారిని ధార్మికులు, సర్వసుగుణ సంపన్నులయేట్లు ప్రయత్నిస్తుంది. పర పురుషుల వైపు చూడదు. చూడవలసిన సందర్భం వచ్చినపుడు వారిని తండ్రివలె, సోదరుని వలె, భావిస్తుంది. తీర్థాలు, తిరునాళ్లు అనే నెపంతో పురుషుల మధ్య నెట్టుకోవడం, త్రోసుకోవడంలో పాల్గొనక తన గృహమందే ఈశ్వరభక్తితో మెలగుతుంది.

భర్తతో తప్ప మరెవ్వరితో పనిపెట్టుకోదు. ఎవరు ఎన్ని ఆశలు చూపినా తన మనస్సును చలించనీయదు. పతివ్రతయైన స్త్రీ మర్యాదకు తగినట్లుగా తన శీలాన్ని కాపాడుకొంటూ, స్త్రీలకు భూషణమైన లజ్జను రక్షించే వస్త్రాలనే ధరిస్తుంది. ఎల్లప్పుడు ప్రసన్నంగా ఉంటుంది. ధైర్యంగా మెల్లగా, గంభీరంగా నడుస్తుంది. మ్రోతలు మ్రోగే ఆభూషణాల్ని ధరించదు. సౌభాగ్యవర్ధకంగా, సాధారణంగానే అలంకరించు కునిటుంది. బాహ్యా భరణాలతో తన శరీరాన్ని అలంకరించు కోవడం కంటె సద్గుణాలతో తనను అలంకరించుకోడానికి ఎక్కువగా ప్రయత్నిస్తుంది. సదాచారాలను పాటిస్తూ తన శీలాన్ని సదా రక్షించుకొంటూ సత్యాన్నే

మాట్లాడుతుంది. ఎవరితోను వైరం పెట్టుకోదు. కామ, క్రోధ లోభాదులకు లొంగిపోదు. సంతోషం, దయ, క్షమ, సహనం, త్యాగం మొదలైన ఉత్తమ గుణాల్ని తన జీవితంలో ఆచరించి చూపుతుంది. ఎవరి మనస్సును నొప్పించే పనులు చేయదు. తన కుటుంబీకులతోగాని, ఇరుగుపొరుగు వారితోగాని, గిల్లి జగడాలు పెట్టుకొని కష్టాలుకొని తెచ్చుకోదు. కులటలైన స్త్రీలతో (వ్యభిచారిణులతో) పొరపాటుగా కూడా సంబంధం పెట్టుకోదు. విఘ్నాలు వచ్చినా ఆపదలు సంభవించినా ధర్మమార్గాన్ని విడువదు. ఈ లక్షణాలన్నీ పతివ్రతలకు స్వభావ సిద్ధంగా ఉంటాయి.

ఈ సందర్భంగా "పురాణ కాలంలో స్త్రీ" అనే శీర్షిక క్రింద 'అభిసారిక' (మాసపత్రిక) జూలై 1973 లో యిచ్చిన విషయాన్ని ఇక్కడ ఉద్ధరిస్తాను. ఇందులో పతివ్రత స్త్రీ, కుటుంబంలో భర్త పట్ల, కుటుంబ సభ్యులపట్ల ఎలా మసలుకోవాలో ద్రౌపది సత్యభామకు ఉపదేశించిన విషయం ఉంది.

పాండవులందరికీ ద్రౌపది సమాన ఆస్తి అయిఉన్నా, ఆమె వాళ్ళందర్నీ తన అధికారంలో ఉంచుకొనేది. ఒక్కగానొక్క భర్త అయిన శ్రీకృష్ణునితో వేగలేక పోతున్న సత్యభామ, ద్రౌపది అయిదుగురు భర్తలను ఎలా అదుపులో పెట్టుకుంటుందా అని ఆశ్చర్యపోతుంది. ఆ రహస్యం తెలుసుకోవాలని ఆమె ద్రౌపదినే సూటిగా అడుగుతుంది.

"ద్రౌపదీ! నీభర్తలు గొప్ప బలవంతులు, మహావీరులు, వ్యక్తిత్వం తక్కువ ఉన్న వాళ్ళుకారు. అలాంటి వాళ్ళని నీవెలా ఆకర్షించుకున్నావ్? ఏమి వ్రతాలు చేశావు? ఏతవస్సు ఏతీర్థస్నానాలు, ఏమంత్రాలు, ఏఔషధాలు సేవించావ్? ఏమూలికలు వాడావు? ఏజపం చేశావ్? అదేదో నాకు చెబితే నేను కూడా ఆచరించి, శ్రీకృష్ణుణ్ణి నావశంలో పెట్టుకుంటాను" అని అడిగింది.

అప్పుడు ద్రౌపది ఇలా సమాధానం చెప్పింది. "సత్యభామా! ఏమిటాప్రశ్న? కులటలు, దురాచారిణులు అయిన స్త్రీలు చేసే వాటి గురించి నన్నడుగుతావా? ఇలాంటి ప్రశ్నలు అడగడం నీకు న్యాయమా? నీ భర్తకు నీయందుండే ప్రేమ గురించి నీకు సందేహం ఎందుకు కలగాలి? నీవు బుద్ధిమంతురాలివి. శ్రీకృష్ణుని పట్ట మహిషివి. ఇలాంటి ఆలోచనలు రావటం నీకు మంచిదేనా?"

"తన భార్య తనను వశపరచుకోవటం కోసం మంత్రాల్నీ, తంత్రాల్నీ, ఔషధాల్నీ ప్రయోగిస్తున్నదని తెలిస్తే ఇంటిలో దూరిన సర్పాన్ని చూసినట్లు ఆ భార్యను చూసి భయపడతాడు. అలాంటి వాడికి శాంతి ఉంటుందా ? శాంతిలేని వాడికి ఇంటిలో సుఖం లభిస్తుందా ?"

"వశీకరణ ఔషధాల గురించి అడుగుతున్నావ్. వశీకరణ ఔషధాలు కావవి, మారణాయుధాలు! వాటినిచ్చి భర్తను చేతులారా చంపుకున్న స్త్రీలు చాలా మంది ఉన్నారు. నీ భర్త శత్రువులు నీచేత నీ భర్తను చంపించడం కోసం వశీకరణ ఔషధాలని చెప్పి, నీకు అంటగడతారు. అవి నాలిక్కీ, చర్మానికీ తాకితే చాలు నీ భర్త చచ్చిపోతాడు. ఎందరో స్త్రీలు ఇలాగనే మందుపెట్టి భర్తకు జలోదరాన్నీ, కుష్ఠురోగాన్నీ, అకాలంలో వార్ధక్యాన్నీ, నపుంసకత్వాన్నీ, గుడ్డితనాన్నీ, మూగతనాన్నీ, చెవుడునూ తెచ్చి పెట్టారు. పాపాత్ముల్ని ఆశ్రయించి కొందరు స్త్రీలు పాపిష్ఠులై భర్తలను అనేక ఆపదలకు గురిచేశారు. కనుక పతివ్రత ఎప్పుడూ కూడా అలాంటి చెడ్డ పద్ధతుల్ని అనుసరించకూడదు. భర్త అభిమానాన్ని సంపాదించడానికి అంతకన్నా గొప్పవైన విధానాలున్నాయి. నేనేం చేస్తున్నానో చెబుతాను విను.

"నాకు కోపం లోదు. అహంకారం లేదు. దర్పం లేదు. పాండవుల్నీ, వారి ఇతర భార్యల్నీ సేవిస్తూ ఉంటాను. నా స్వేచ్ఛను అణచుకుంటాను. మనస్సును అదుపులో పెట్టుకుంటాను. స్వాభిమానం పెట్టుకోను. మావారి మనస్సుకు నచ్చినట్లుగా నడచుకుంటాను. ఎప్పుడూ వాళ్ళను నొప్పించే మాటలు పలకను. అసభ్యంగా నిలబడను. సిగ్గువిడిచి పెట్టి అంతటా దృష్టి పోనివ్వను. చెడు ప్రదేశాల్లో కూర్చోను. చెడ్డ పని చెయ్యను. అసభ్యంగా నడవను. సుందరుల్నీ, అలంకరించుకున్నవాడినీ, ధనికుణ్ణీ కన్నెత్తి చూడను. భర్తలకు, సేవకులకు అన్నం పెట్టకుండా నేను తినను. భర్తలు స్నానం చెయ్యకుండా నేను చెయ్యను. వారు కూర్చోకుండా నేను కూర్చోను. బయటి నుంచి వారు ఇంటికి వస్తుంటే ఎదురేగి నవ్వుతూ పలకరించి, కూర్చోబెట్టి, పానీయాలిచ్చి, సేద తీరుస్తాను. వంటగిన్నెలు నేనే స్వయంగా తోముతాను. వాళ్ళకు ఇష్టమైన ఆహారాన్ని వండిపెడతాను. ఇంద్రియాలను నావశంలో ఉంచుకుంటాను. ఆహార పదార్థములన్నీ నేనే సేకరించి ఉంచుకుంటాను. ఇంటిని నేనే ఊడ్చుకుంటాను. అలికి శుభ్రంగా పెట్టుకుంటాను. ఎవరినీ తిరస్కరించి మాట్లాడను. దుష్ట స్త్రీలకు దూరంగా ఉంటాను. ఏమాత్రం బద్ధకించను.

"మా వారు నన్ను వేళాకోళం చేస్తే తప్ప నవ్వను. మాటి మాటికి ఇంటి వాకిట్లో నిలబడను. మురికి ఉండే చోట ఉండను. ఒంటరిగా పూల తోటల్లోకి వెళ్ళను. విచారంగా కనబడను. వెకిలిగా నవ్వను. ఎక్కువగా కోప్పడను. నిజం చెబుతాను. వారులేని చోట్ల ఉండను. వారు పరదేశం వెళ్ళినట్లయితే పువ్వులు పెట్టుకోను. సుగంధ ద్రవ్యాలు వాడను. బ్రహ్మచర్యం పాటిస్తాను. వాళ్ళకిష్టమైనవే నేనూ తింటాను. త్రాగుతాను. వాళ్ళని సేవించేటప్పుడు అందమైన బట్టలూ, నగలూ ధరిస్తాను. కుటుంబ ధర్మాల విషయంలో మా అత్తగారు చెప్పినట్లు చేస్తాను. మా ఇంటి ఆచారాలను ఆ ఇంట ప్రవేశపెట్టను. మా అత్తగారిని తిట్టను. ఆమెకు అన్నమూ, పానమూ, వస్త్రా సకాలంలో సమకూరుస్తాను. ఇదే నా వశీకరణ మంత్రం ఇదే అన్నిటికన్నా గొప్ప ఉపాయమని నాకు తెలుసు. దుష్టస్త్రీలు ప్రయోగించే మందులూ మాకులూ నాకు తెలియవు." ఇలా ద్రౌపది, సత్యభామకు తాను కుటుంబ సభ్యులతో, భర్తలతో ఎలా మెలగుతుందో వివరించింది.

పతివ్రత ధర్మమహత్యాన్ని తెలిసికొని ప్రతి స్త్రీ ఈ వ్రతాన్ని పాలించడం ఉచితమౌతుంది. స్త్రీలకు ఇదే ముఖ్య కర్తవ్యం; ధర్మం అవుతుంది. ఈ పతివ్రత ధర్మం వల్లనే స్త్రీలకు ఈ లోకంలో సుఖం, పరలోకంలో సుఖశాంతులు, ఆనందం ప్రాప్తిస్తాయి. ఈ వ్యాసంలో వివరించిన విధంగా కుటుంబ సభ్యులందరూ తమ తమ విధుల్ని నిర్వర్తించుతూ పరస్పరం ప్రేమాభిమానాలతో వర్తించినపుడు ఆకుటుంబమంతా సుఖశాంతులతో వర్ధిల్లుతుంది.

ఆర్య సమాజ్ న్యూ బోయిన్‌పల్లి సికింద్రాబాద్
(ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ అనుబంధ శాఖ)
ఆధ్వర్యంలో

141 వ ఆర్య సమాజ స్థాపన దినము మరియు
గాయత్రి మహాయజ్ఞం
ఏప్రిల్ 08-04-2016 శుక్రవారము రోజున

ఉదయం 6.00 గం॥ల నుండి సా॥ 6.00 గం॥ల వరకు

ఆర్య సమాజ్ న్యూ బోయిన్‌పల్లి సికింద్రాబాద్ ఆధ్వర్యంలో ఏప్రిల్ 08-04-2016 శుక్రవారము రోజున ఉదయం 6.00 గం॥ల నుండి సా॥ 6.00 గం॥ల వరకు 141 వ ఆర్య సమాజ స్థాపన దివస్ సందర్భమున గాయత్రి మహాయజ్ఞము సమాజ మందిరములో నిర్వహించబడును కావున తామెల్లరు నిరంతరంగా 12 గం॥లు జరుగు ఈ మహా యజ్ఞములో తప్పక (ఎంత బిజీగా ఉన్న) పాల్గొని కనీసము 3 ఆహుతులైన ఇచ్చి ధన్యులు కాగలరని కోరుచున్నాము.

ప్రెసిడెంట్	ట్రెజరర్	సెక్రెటరి
వరుణ్ రాజ్	**అంజిరెడ్డి**	**బృహస్పతి**

ఆర్య సమాజ్ న్యూబోయిన్‌పల్లి సికింద్రాబాద్

आर्यसमाज न्यू बोईनपल्ली, सिकन्दराबाद
(आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना'' से अनुबंधित)
के तत्वावधान में

141वा आर्य समाज स्थापना दिवस व
गायत्री महा यज्ञ
सभी को सादर आमंत्रण

141वे आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर दिनांक 08-04-2016 शुक्रवार के दिन प्रातः 6.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक गायत्रि महा यज्ञ का आयोजन आर्य समाज न्यू बोईनपल्ली में किया जा रहा है । सभी से निवेदन है कि इस यज्ञ में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर पुण्य के भाग्य बने । अपनी व्यस्तता के बावजूद कम से कम तीन-तीन आहुतिया देकर कार्यक्रम को सफल बनाए ।

प्रधान	कोषाध्यक्ष	मंत्री
वरुणराज	**अन्जिरेड्डी**	**बृहस्पति**

आर्यसमाज न्यू बोइनपल्ली, पेद्दातोकट्टा, सिकन्दराबाद, **सेल नं : 9652669732**

.....14వ పేజీ తరువాయి

సంతతిని ఎలా వృద్ధి చేసుకున్నారో... ఒప్పుకోని వారిని అడ్డంగా నరికి, మిగిలిన వారిని హడలగొట్టి తమ దారికి ఎలా తెచ్చుకున్నారో ఆ కాలపు మహమ్మదీయ ఆస్థాన చరిత్రకారులే కళ్లకు కట్టినట్టు సవిస్తరంగా వర్ణించారు. సంఖ్యలో, స్థాయిలో తేడాలే తప్ప అవన్నీ సింధ్‌లో కాశిం చేయించిన ఘాతుకాల వంటివే. అఘాయిత్యాలకు లోనైన వారిని సింధ్ హిందువులు తిరిగి అక్కున చేర్చుకున్నట్టే బలవంతపు మత మార్పిడులకు గురి అయిన వారిని అనంతర కాలపు వారూ తమలో తిరిగి కలుపుకొని ఉంటే దేశంలో హిందువుల సంఖ్య కాలక్రమాన ఇంతలా క్షీణించేది కాదు.

పెద్ద ఆపద వచ్చినప్పుడు పెద్ద మనసుతో ఆలోచించాల్సింది పోయి, మూర్ఖంగా, చాదస్తంగా వ్యవహరించి మతభ్రష్టులైన వారిని ఎట్టి పరిస్థితుల్లోనూ మళ్లీ కులంలో కలుపుకొనేది లేదని కుల పెద్దలు నిరాకరించటం వల్ల, మత పెద్దలూ వారికే వత్తాసునివ్వడం చేత ఒక వెయ్యి సంవత్సరాలకు పైగా హిందూ సమాజం తనకు తానే తీరని హాని చేసుకుంది. మతమౌఢ్యపు ఊబిలో కళ్లు తెరచుకునే దిగబడిపోయింది.

అన్య మతస్థులను హిందు మతంలోకి తిరిగి తీసుకోవడం చరిత్రలో అసలు జరగనే లేదనే కాదు. ఉదాహరణకు ఛత్రపతి శివాజీ మొగలులు బలవంతంగా మతం మార్చి, మహమ్మద్ కులీఖాన్ అని పేరు పెట్టిన తన సేనావతి నేతాజీ పాల్కర్‌ని సనాతన హిందువులు వ్యతిరేకించినా పట్టుబట్టి స్వధర్మంలోకి తిరిగి తీసుకొచ్చాడు. చైతన్య మహా ప్రభు ప్రభావంతో చాలామంది మహమ్మదీయులు భక్తి ఉద్యమంలోకి వచ్చి చేరారు. వివేకానంద స్వామి మార్గరెట్ నోబుల్‌కి బ్రహ్మచర్య దీక్ష ఇచ్చి నివేదితగా పేరు మార్చాడు. మిస్ మాడలైన్ స్లేడ్ మహాత్మాగాంధీ ప్రభావంతో మీరాబెన్ అయింది. అన్నట్టు వీరబ్రహ్మంగారి ముఖ్య శిష్యుడు సిద్దయ్య కూడా మహమ్మదీయుడే. ఇలాంటి దృష్టాంతాలు ఇంకా చాలా ఉన్నాయి. కాని అవన్నీ వ్యక్తిగతమైనవి. ప్రత్యేక పరిస్థితుల్లో ఫలానా ఒకరి విషయంలో జరిగిన మతాంతరీకరణలే తప్ప ఒక నిర్దిష్ట విధానంతో, సామూహికంగా జరిగిన 'ఘర్ వాపసీ'లు కావు. ఆధునిక కాలంలో 'శుద్ధి' ప్రక్రియకు ఆద్యుడు ఆర్యసమాజ్ సంస్థాపకుడు దయానంద సరస్వతి స్వామి. 1877లో డెహ్రాడూన్‌లో జన్మతః మహమ్మదీయుడైన వాడికి వైదిక 'శుద్ధికరణ' చేసి 'పునరాగమన' ప్రక్రియను చేపట్టిన దాఖలాలు లేవు. ఆ మాటకొస్తే ఆర్య సమాజానికి పవిత్ర గ్రంథం అయిన సత్యార్థ ప్రకాశ్‌లో అన్య మతాల సిద్ధాంతాలతో సహా ఎన్నెన్నో అంశాలను చర్చించిన దయానంద స్వామి ఎందువల్లో గాని 'శుద్ధి' విషయం ప్రస్తావించలేదు.

నిస్సహాయస్థితిలో బలవంతంగా మతం మార్చబడ్డవారు తిరిగి స్వధర్మంలోకి రావడానికి అసలు ప్రాయశ్చిత్తాలతో పనిలేదు. అన్య మతాల్లో పుట్టిన వారినీ ఏ ప్రాయశ్చిత్తమూ లేకుండానే హిందూ మతంలోకి తీసుకోవచ్చు. బయటికి వెళ్లే ముందు ఏ కులంలో ఉంటే వెనక్కి వచ్చాకా అదే కులం పొందుతారు - అన్న దార్శనిక వైఖరి వెలిబుచ్చిన వివేకానంద స్వామికి దేవుడు మరికాస్త ఆయుపును, ఆరోగ్యాన్ని అనుగ్రహించి ఉంటే బహుశా ధార్మిక రంగంలో ఒక మహా విప్లవాన్ని తెచ్చేవాడే.

హిందూ సమాజం అంతటి అదృష్టానికి నోచుకోకపోతేనేమి? మరణానికి కొద్దికాలం ముందు వివేకానందుడు పైన ఉటంకించిన అమూల్యాభిప్రాయాన్ని ప్రకటించిన సమయానికే ఇంకొక మహాస్వామి ఇంచుమించుగా అదే పనిలో నిమగ్నమై ఉన్నాడు. తన గురువు దయానందుల వారు చూపిన 'శుద్ధి' మార్గంలో హిందూ సమాజాన్ని సంఘటితం చేసేందుకు అనంతర కాలంలో ఆయన పెద్ద ఉద్యమమే నడిపాడు.

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के तत्वावधान में आयोजित विद्वत समागम में विदुषी एवं विद्वान महानुभाव सभा को सम्बोधन करते हुए

Dateof Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

र्यजीवन 18-03-2016 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Editor: Vithal Rao Arya, M.Sc. LL.B., Sahityaratna

Arya Prati...hi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.

Phone No. 04 ... 753827, 66758707, Fax: 040-24557946

Annual subscription ... - విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్ సభ

To,

Editor, Arya S

5 Har man Roa

elhi-110001

विद्वत समागम में विदुषी एवं विद्वान महानुभाव सभा को सम्बोधन करते हुए

विद्वानों का सम्मान करते हुए सभा मंत्री हरिकिशन वेदालंकारजी

विद्वत समागम में विदुषी एवं विद्वान महानुभाव सभा को सम्बोधन करते हुए

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

Editor: Vithal Rao Arya ● acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com

संपादकः श्री विट्ठलराव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।

प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.